Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

**अल्लाह तआला का आदेश**

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَخۡفٰی
عَلَیۡہِ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ
وَلَا فِی السَّمَآءِ ○

(सूरः आलेइमरान: 6)

अनुवाद : निःसंदेह अल्लाह वह है जिस पर कोई भी वस्तु पृथ्वी में हो या आकाश में हो छिपी नहीं रहती।

वर्ष- 10
अंक - 46
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

# साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 जमादिउल अव्वल, 1446-47 हिज्री कमरी, 13 नबुव्वत 1404 हिज्री शम्सी, 13 नवम्बर 2025 ई.

**अख़बार-ए-अहमदिया**

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

### धार्मिक कर्तव्यों की शिक्षा

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णन है कि एक व्यक्ति (ज़माम बिन सअलबा रज़ियल्लाहु अन्हु) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया, तो देखते हैं कि वह आपसे इस्लाम के विषय में पूछ रहा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

दिन-रात में पाँच नमाज़ें पढ़ना। उसने कहा: क्या मेरे ऊपर इनके अलावा कोई और नमाज़ भी है? आपने फ़रमाया: नहीं, सिवाय इसके कि तुम स्वेच्छा से कुछ (नफ़्ली) पढ़ो। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: रमज़ान के महीने के रोज़े भी रखना अनिवार्य है। उसने कहा: क्या मेरे लिए इसके अलावा कोई और रोज़े भी हैं? आपने फ़रमाया: नहीं, सिवाय इसके कि तुम स्वेच्छा से रोज़े रखो। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे ज़कात का उल्लेख किया। उसने कहा: क्या मेरे ऊपर इसके अलावा कुछ और भी है? आपने फ़रमाया: नहीं, सिवाय इसके कि तुम स्वेच्छा से कुछ दान करो। (हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने) फ़रमाया: यह सुनकर वह व्यक्ति पीठ फेरकर चला गया और यह कहता जा रहा था: अल्लाह की कसम! मैं न इनसे अधिक करूँगा और न ही कम। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यदि यह सच्चा है तो उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

(सहीह बुख़ारी, जिल्द 4, किताब अश-शहादात, प्रकाशन वर्ष 2008 क़ादियान)

## जो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को न माने वह काफ़िर है परन्तु जो महदी और मसीह को न माने उसका भी ईमान छिन जाएगा, परिणाम एक ही है

## हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

क्षमा-याचना

एक व्यक्ति ने ऋण के लिए प्रार्थना करने की प्रार्थना की। आपने फ़रमाया:

"बहुत अधिक क्षमा-याचना (इस्तिग़फ़ार) करते रहो।"

अरबी व्याख्या (तफ़्सीर) के लिए गैबी शक्ति

कुरआन की व्याख्या लिखने के विषय में फ़रमाया:

"दिन बहुत कम रह गए हैं। अब तो हम इस प्रकार शीघ्रता-शीघ्रता लिखते हैं जैसे उर्दू लिखी जाती है, बल्कि कई बार तो कलम लगातार चलती रहती है और हम नहीं जानते कि क्या लिख रहे हैं।"

दूसरों के पीछे नमाज़

किसी ने प्रश्न किया कि जो लोग आपके अनुयायी नहीं हैं, उनके पीछे नमाज़ पढ़ने से आपने अपने अनुयायियों को क्यों मना फ़रमाया है?

हज़रत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"जिन लोगों ने जल्दबाजी के साथ गलत धारणा बनाकर उस श्रृंखला को, जिसे अल्लाह तआला ने स्थापित किया है, अस्वीकार कर दिया है और इतने संकेतों (निशानियों) की परवाह नहीं की और इस्लाम पर जो कष्ट हैं,

शेष पृष्ठ 07 पर

## अल्लाह तआला ने जितनी भी चीज़ों को वर्जित (हराम) घोषित किया है, उसका कारण उनके शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक हानिकारक प्रभाव हैं और केवल ऐसी ही वस्तुओं के खाने को उचित (जाइज़) घोषित किया है जो मनुष्य की शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का कारण बनें

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल-मोमिनून की आयत संख्या 52, یٰۤاَیُّهَا الرُّسُلُ كُلُوۡا مِنَ الطَّیِّبٰتِ وَاعۡمَلُوۡا صَالِحًا ؕ اِنِّیۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ عَلِیۡمٌ ﴿۵۲﴾ 'हे रसूलों! पवित्र चीज़ों में से खाओ और भले कर्म करो, निश्चय ही मैं उस कर्म को जानता हूँ जो तुम करते हो', की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

"इस आयत से यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि इसमें केवल पैग़म्बरों को संबोधित किया गया है, क्योंकि पवित्र कुरआन का यह सिद्धांत है कि इसमें कुछ स्थानों पर संबोधन पैग़म्बरों से किया जाता है लेकिन अभिप्राय उनके सभी अनुयायी होते हैं। जैसे पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित करके फ़रमाता है: 'और यदि तुम्हारे माता-पिता में से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो और न ही उन्हें डाँटो और उनसे आदरपूर्वक बात करो' (सूरा बनी इसराईल, रुकू 3)। अब इस स्थान पर संबोधन बाह्य रूप से मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से है लेकिन अभिप्राय आपकी उम्मत के सदस्य हैं, क्योंकि आपके पिता तो आपकी जन्म से पहले ही और आपकी माता आपके वयस्क होने से पहले ही स्वर्गवासी हो चुकी थीं। इसी सिद्धांत के अनुसार, हालाँकि यहाँ रसूलों को संबोधित किया गया है लेकिन अभिप्राय उन रसूलों के अनुयायी हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें आदेश दिया है कि तुम हलाल और पवित्र वस्तुएँ खाओ, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप तुम्हें अच्छे कर्म करने की सफ़लता प्राप्त होगी।"

"वास्तविकता यह है कि मनुष्य के भोजन का उसके नैतिक चरित्र पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है और जिस प्रकार के प्रभाव किसी भोजन में पाए जाते हैं, वैसे ही शारीरिक या नैतिक परिवर्तन उत्पन्न होने लगते हैं। चूँकि संसार में मनुष्य को अपनी सभी प्राकृतिक प्रवृत्तियों को जागृत करने और उन्हें विकसित करने की आवश्यकता होती है ताकि वह उनका उचित उपयोग करके अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त कर सके, इसलिए पवित्र कुरआन ने उन भोज्य पदार्थों के उपयोग से मना फ़रमाया है जिनका कोई शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक हानिकारक प्रभाव स्पष्ट हो। उदाहरण के लिए, अल्लाह तआला ने मुर्दार, रक्त और सूअर के मांस को वर्जित घोषित किया है। इसी प्रकार हर उस चीज़ को भी वर्जित घोषित किया गया है जिस पर अल्लाह तआला के अलावा किसी और का नाम लिया गया हो। अब स्पष्ट है कि इनमें से कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो अपने आप में बहुत बड़े हानिकारक प्रभाव न रखती हो। मुर्दार को ही ले लो, यदि कोई जानवर मर जाए तो उसके विषय में यही कहा जा सकता है कि या तो वह बिल्कुल बूढ़ा होकर मरा है या किसी विषैले जानवर के काटने के कारण मरा है या किसी बीमारी या विष के परिणामस्वरूप मरा है और ये सभी चीज़ें ऐसी हैं जो उसके मांस को विषैला और उपयोग

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

## ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू हवाज़िन की दर्दभरी प्रार्थनाएँ सुनीं और उनके अनुरोध को अस्वीकार तो नहीं किया बल्कि फ़रमाया: मैंने तो बहुत दिनों तक तुम्हारी प्रतीक्षा की, यहाँ तक कि मुझे विश्वास हो गया कि अब तुम नहीं आओगे और अब तुम देख रहे हो कि बंदियों में से मेरे पास बहुत ही कम रह गए हैं। बाकी सब बाँट दिए गए हैं और मेरे निकट सबसे अधिक पसंदीदा बात वह है जो सबसे अधिक सच्ची हो। इसलिए अब तुम दो चीज़ों में से एक चीज़ का चयन कर सकते हो: बंदी पुरुष-स्त्रियाँ या धन-संपत्ति।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू हवाज़िन के उन बंदियों को न केवल बिना किसी मुआवज़े के मुक्त कर दिया बल्कि उन्हें कपड़े भी प्रदान किए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अभी जिअराना नामक स्थान पर ही थे कि एक रात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उमरा के इरादे से वहाँ से मक्का चले गए और विवरणों के अनुसार रात को गए और उसी रात को ही वापस आ गए।

मालिक बिन औफ़ समस्त बनू हवाज़िन, सक़ीफ़ और अन्य कबीलों को एकत्रित करके ले आया था ताकि मुसलमानों का विनाश कर दे। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रक्त का प्यासा था, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श और क्षमा व दया की पराकाष्ठा यह है कि आप उसके मार्गदर्शन के इच्छुक थे और जब वह मार्गदर्शन चाहकर आया तो न केवल सब कुछ क्षमा कर दिया बल्कि उसे उस समय की अत्यंत मूल्यवान संपत्ति के रूप में सौ ऊँट भी प्रदान कर दिए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी दूध पिलाने वाली (ज़ाई) बहन से फ़रमाया: यदि तुम उचित समझो तो हमारे पास ठहर जाओ। तुम्हें सम्मान, आदर और प्रेम मिलेगा और यदि तुम अपने कबीले के पास वापस जाना चाहती हो तो मैं तुम्हारे साथ रिश्तेदारी का व्यवहार करता हूँ, तुम वहीं चली जाओ।

हुनैन के युद्ध की परिस्थितियों और घटनाओं के संदर्भ में पैग़म्बर की जीवनी (सीरत) का ईमान को प्रकाशित करने वाला वर्णन माननीय डॉक्टर लईक़ अहमद फर्रुख़ साहिब (कनाडा) और माननीय हमीद अहमद ग़ौरी साहिब (हैदराबाद, भारत) का सद्स्मरण और उनकी अनुपस्थित नमाज़-ए-जनाज़ा

मैं भी उन (डॉक्टर लईक़ अहमद फर्रुख़ साहिब) के प्रवास के दौरान घाना में रहा हूँ। मैंने उनके साथ समय बिताया है और मैंने उन्हें देखा है। वे अत्यंत शालीन, विनम्र और सेवा करने वाले व्यक्ति थे। वाक़िफ़ीन-ए-नौ का बहुत आदर करने वाले थे। उनमें अतिथि-सत्कार कूट-कूट कर भरा हुआ था, बल्कि दोनों पति-पत्नी अतिथि-सत्कार में निपुण थे। ऐसी बहुत सी विशेषताएँ थीं जो बहुत कम लोगों में पाई जाती हैं।

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 सितम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हुनैन के युद्ध के बाद वहाँ प्राप्त युद्ध-संपत्ति और उसके वितरण का वर्णन हो रहा था। इस विषय में अतिरिक्त घटनाएँ इस प्रकार वर्णित हुई हैं कि अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुनैन की विजय के बाद सारी युद्ध-संपत्ति जिअराना नामक स्थान पर एकत्रित करने का आदेश दिया और यह आदेश देते हुए आपने ताइफ़ की ओर प्रस्थान किया और लगभग एक महीने बाद ताइफ़ से वापस जिअराना पहुँचे और यहाँ पहुँचकर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने युद्ध-संपत्ति का वितरण नहीं किया बल्कि कुछ दिन प्रतीक्षा की। कुछ के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तेरह-चौदह दिन तक प्रतीक्षा की कि शायद बनू हवाज़िन पश्चाताप करके वापस आएँगे और उनके परिवार व पशुधन उन्हें लौटा दिए जाएँगे। एक ओर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी प्रतीक्षा करते रहे, दूसरी ओर बनू हवाज़िन इस दुविधा में रहे कि हमारा जाना लाभदायक होगा या नहीं। जब देखा कि वे लोग नहीं आ रहे हैं, तो अंततः इतनी प्रतीक्षा के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने युद्ध-संपत्ति और बंदियों का वितरण कर दिया। जब यह सब वितरित हो चुका तो बनू हवाज़िन के चौदह सम्मानित व्यक्ति आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। वे इस्लाम स्वीकार कर चुके थे और उन्होंने बताया कि हमारा सारा कबीला भी इस्लाम स्वीकार कर चुका है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दया की प्रार्थना करते हुए निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! हम एक अच्छे परिवार के लोग हैं और सम्मानित हैं। जिस विपदा और कठिनाई से हम दो-चार हैं, वह आपसे छिपी नहीं है। आप हम पर कृपा करें, अल्लाह तआला आप पर कृपा करेगा। इस प्रतिनिधिमंडल का नेता अबू सुरद जुहैर बिन जरवोल था। वह एक वक्ता और कवि भी था। उसने बहुत ही मनमोहक और हृदयस्पर्शी ढंग से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समक्ष दया की अपील की और कहा: हे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! इन गिरफ़्तार होने वालों में आपकी बुआएँ, आपकी मौसियाँ और आपकी बहनें भी हैं जिन्होंने आपका पालन-पोषण किया है और आपको खिलाया-पिलाया है। उसने ऐसा क्यों कहा? क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू सअद कबीले में दूध पीने का समय बिताया था और वहाँ पले-बढ़े थे और आपके दूध पिलाने वाले माता-पिता का संबंध बनू सअद से था जो बनू हवाज़िन की एक शाखा थी। फिर उसने कहा कि यदि हमने दूध पिलाने का उपकार ग़स्सानी के बादशाह हारिस बिन अबी शिमर या इराक़ के बादशाह नोमान बिन मुन्ज़िर पर किया होता और हम पर इस प्रकार की विपदा आई होती तो वे हम पर अवश्य दया करते और आप तो सबसे बढ़कर दया करने वाले और उदारता व दानशीलता के स्वामी हैं। इसके बाद उसने आपकी प्रशंसा और गुणगान में एक कविता (क़सीदा) भी सुनाई। इस प्रतिनिधिमंडल में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दूध पिलाने वाले चाचा भी थे। उन्होंने भी कुछ इसी प्रकार की मिली-जुली भावनाओं पर भाषण दिया और यह भी कहा कि जब आप बचपन में हमारे पास थे तब भी मैंने आपको देखा था। आप बहुत ही अच्छे थे। फिर आपकी जवानी के समय में मुझे आपके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जवानी में भी कोई व्यक्ति आपसे बढ़कर उत्तम चरित्र और शालीन नहीं था। आप तो साक्षात भलाई और उत्तमता का प्रतिरूप हैं और उदारता व दानशीलता की नदियाँ हैं। हम आपके अपने हैं और आप ही के परिवार से हैं, अतः हम पर कृपा

करें। अल्लाह आपको इस एहसान का बदला अवश्य देगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी दर्दभरी प्रार्थनाएँ सुनीं और उनके अनुरोध को अस्वीकार तो नहीं किया बल्कि फ़रमाया: मैंने तो बहुत दिनों तक तुम्हारी प्रतीक्षा की, यहाँ तक कि मुझे विश्वास हो गया कि अब तुम नहीं आओगे और अब तुम देख रहे हो कि बंदियों में से मेरे पास बहुत ही कम रह गए हैं। बाकी सब बाँट दिए गए हैं और मेरे निकट सबसे अधिक पसंदीदा बात वह है जो सबसे अधिक सच्ची हो। इसलिए अब तुम दो चीज़ों में से एक चीज़ का चयन कर सकते हो: बंदी पुरुष-स्त्रियाँ या धन-संपत्ति।

तुममें से जो लेना चाहो, ले सकते हो। मैंने तो तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की थी। मेरी इच्छा तो यह थी कि तुम्हें दोनों ही दे दूँ। बनू हवाज़िन के प्रतिनिधिमंडल ने जब सारी स्थिति देखी तो उन्होंने निवेदन किया कि हम अपने बंदी, अर्थात अपने पुरुषों और स्त्रियों को वापस लेना चाहते हैं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मेरे और बनू अब्दुलमुत्तलिब के हिस्से में आने वाले जो बंदी हैं, वे तो तुम्हारे ही हो गए, अर्थात मैं उन्हें तो मुक्त करता हूँ, तुम्हें वापस दे देता हूँ। और दूसरे बंदियों के संबंध में मैं शेष मुसलमानों से बात करूँगा जिन्हें मैंने ये दे दिए हैं। और साथ ही प्रतिनिधिमंडल के लोगों को इसका एक समाधान भी बताया कि तुम लोग किस प्रकार क्या करना। तुम ज़ुह्र की नमाज़ के बाद लोगों के सामने खड़े होकर कहना कि हम मुसलमानों के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपना सिफ़ारिश करने वाला बनाते हैं और मुसलमानों के माध्यम से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सिफ़ारिश कराते हैं कि हमारी संतान और हमारी स्त्रियों को छोड़ दिया जाए। और साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमानों के सामने अपने इस्लाम स्वीकार करने का प्रकट कर देना और कहना कि हम तुम्हारे भाई हैं। फिर मैं लोगों से तुम्हारी सिफ़ारिश कर दूँगा, अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं सिफ़ारिश कर दूँगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उदारतापूर्ण व्यवहार, उदारता व दानशीलता का एक प्यारा रूप है कि स्वयं ही बंदियों की मुक्ति का तरीका बता रहे हैं ताकि सामान्य मुसलमानों के स्वाभिमान का भी ध्यान रहे, क्योंकि बंदी अब उनकी संपत्ति बन चुके थे, और हवाज़िन का सम्मान भी बना रहे। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने उसी प्रकार ज़ुह्र की नमाज़ के बाद खड़े होकर निवेदन किया जैसा कि आपने फ़रमाया था।

बुख़ारी के वर्णन के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर लोगों को संबोधित करते हुए फ़रमाया:

तुम्हारे भाई पश्चाताप करके तुम्हारे पास आए हैं। मैं उनके बंदी उन्हें वापस करना चाहता हूँ। जो भी अपनी इच्छा से ऐसा करना चाहे, वह कर सकता है और जो उनके बदले हमसे कुछ लेना चाहे, वह भी कर सकता है। मैं पहली प्राप्त युद्ध-संपत्ति में से उसका अधिकार वापस कर दूँगा। और साथ ही अपने और अपने परिवार, अर्थात बनू अब्दुलमुत्तलिब के बंदी वापस करने की घोषणा फरमाई।

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम तो अपने प्राणों, अपनी पत्नियों-बच्चों और माता-पिता से भी अधिक आपसे प्रेम करने वाले थे। वे कहने लगे: हे अल्लाह के रसूल! आपकी प्रसन्नता के लिए हम खुशी-खुशी अपने बंदी हवाज़िन को वापस करते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके इस जज़्बे को देखकर बहुत प्रसन्न हुए, लेकिन आपने उचित समझा कि सभी की सहमति और खुशी जानी जाए। अतः फ़रमाया: मुझे यह पता नहीं चल रहा है कि तुममें से किसने अनुमति दी है और किसने नहीं दी, क्योंकि सामान्य सभा में सब बोल रहे थे। इसलिए तुम वापस जाओ और तुम्हारे नेता और प्रतिनिधि मेरे पास आकर अपने लोगों का रुख प्रस्तुत करें। आपके इस आदेश पर सभी लोगों ने खुशी-खुशी अपने बंदी वापस देने की स्वीकृति दी और उनके प्रतिनिधियों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत कर दी। और इस प्रकार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह महान उपकार उस शत्रु कबीले पर हुआ कि सभी बंदी बिना किसी मुआवज़े के वापस कर दिए गए और अपने निष्ठावान, वफादार, प्रेम करने वाले सहाबा की भावनाओं का भी इस प्रकार ध्यान रखा कि आपने फ़रमाया कि प्रत्येक बंदी के बदले में छः-छः ऊँट दिए जाएँगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रति प्रेम और आज्ञाकारिता का यह नमूना था कि बंदियों की इस मुक्ति के समय वे वहाँ उपस्थित नहीं थे। जब वे वापस आए तो देखा कि ग़ुलाम खुशी से झूम रहे हैं, बंदी खुशी से झूम रहे हैं। पूछने पर पता चला कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सभी बंदी मुक्त कर दिए हैं, तो उन्होंने यह सुनते ही किसी प्रकार की और खोजबीन या जाँच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं समझी और तुरंत अपने बेटे से कहा: हे अब्दुल्लाह! जाओ और मेरी उस दासी को मुक्त कर दो जो अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे प्रदान की थी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू हवाज़िन के उन बंदियों को न केवल बिना किसी मुआवज़े के मुक्त कर दिया बल्कि उन्हें कपड़े भी प्रदान किए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ोर देकर फ़रमाया: 'फ़ला यख़रुजुल हुरु मिन्हुम इल्ला कासियाँ' कि उनमें से कोई भी मुक्त होने वाला नए वस्त्र केबिना न जाए। अतः इस आदेश की पालना के लिए नए कपड़े खरीदने के लिए एक सहाबी बुस्र बिन सुफ़ियान को भेजा गया, तो वे नई चादरें लेकर आए और प्रत्येक बंदी को नया वस्त्र भी दिया गया।

(सहीह बुख़ारी, किताब अल-इत्क, बाब मन मलिक मिन अल-अरफ़ रक़ीक़, हदीस 2539-2540)(सीरतुन्नबी लि इब्ने हिशाम, पृष्ठ 130, दारुल कुतुब इल्मिया, 2001 ई. से उद्धृत)(दायरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 309 से 314, बज़्मे इक़बाल लाहौर)(ग़ज़वा हुनैन, बाशमील से, पृष्ठ 266, नफ़ीस एकेडमी)

वर्णन के अनुसार तीन व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने अपने बंदी वापस देने से मना कर दिया। अक़रअ बिन हाबिस ने कहा: जहाँ तक मेरा और बनू तमीम का संबंध है, हम इनकार करते हैं। उयैना बिन हिस्न फ़ज़ारी ने कहा: मैं और मेरा कबीला बनू फ़ज़ारा इनकार करते हैं। और अब्बास बिन मिर्दास ने कहा: मैं और बनू सुलैम बंदी वापस नहीं करेंगे। लेकिन बनू सुलैम ने सुनते ही अपने नेता की बात मानने से इनकार कर दिया और कहा: जो कुछ हमारा है, वह हमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दे दिया है।

कुछ अन्य वर्णनों के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बनू हवाज़िन के सभी बंदी मुक्त हैं और जो अपना बंदी मुक्त नहीं करना चाहता, उसे उसके बदले में बैतुलमाल से छः जवान ऊँट मुआवज़े के रूप में दिए जाएँगे। अतः इस पर वे सभी लोग भी राजी हो गए जो अपने बंदी देने को तैयार नहीं थे और इस प्रकार बनू हवाज़िन के छह हज़ार बंदी मुक्त कर दिए गए।

कुछ वर्णनों के अनुसार उयैना बिन हिस्न फ़ज़ारी ने अपना बंदी फिर भी वापस नहीं किया, लेकिन इस अवज्ञा के कारण उसे गंभीर लज्जा उठानी पड़ी और वह भलाई व बरकत से भी वंचित रहा।

अतः लिखा है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया गया कि सबने अपने बंदी वापस कर दिए हैं, सिवाय उयैना के, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह उसे घाटे में रखे। उसके बंदी का वृत्तांत इस प्रकार है कि उसने एक जवान स्त्री के बजाय एक बूढ़ी स्त्री को बंदी के रूप में लिया था और लोगों के पूछने पर बताया कि उसके परिवार वाले जब उसे छुड़ाने आएँगे, यानी इस बूढ़ी को, तो मुझे उसकी ओर से मनमाँगा फिदया (मुआवज़ा) मिलेगा, क्योंकि उसकी संतान अधिक संख्या में होगी। अब जब सारे बंदी मुक्त कर दिए गए, लेकिन उसने मुक्त करने से मना कर दिया, तो उस बूढ़ी स्त्री का बेटा उयैना के पास आया और उससे कहा कि सौ ऊँट के बदले हमारी माता को मुक्त कर दो। उयैना ने सोचा कि अभी यह कीमत और बढ़ाएगा। अतः उसने मुक्त करने से मना कर दिया, जिस पर उसका बेटा वापस चला गया। कुछ देर बाद जब उयैना को यह एहसास हुआ कि वह दोबारा वापस नहीं आएगा, तो उयैना स्वयं उसके बेटे के पास गया और कहने लगा कि जितने ऊँट तुम दे रहे थे, क्या अब भी देते हो? तो उस लड़के ने कहा: अब तो मैं पचास ऊँट दूँगा। इस तरह करते-करते दस ऊँटों तक बात पहुँच गई। वह कुछ और माँगता और फिर वह कहता: अच्छा, मैं यह भी नहीं देता। तो वह कहता: अच्छा, फिर इतने दे दो। आख़िर घटते चले गए। आख़िरकार बात यहाँ तक पहुँची कि उयैना कहने लगा: बुढ़िया को मेरे से मुफ़्त ही ले जाओ। इस पर लड़का कहने लगा: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो हर बंदी को मुक्त करने के साथ वस्त्र भी दिए हैं और यह बुढ़िया तो उससे वंचित रह गई है। अतः तुम उसके लिए वस्त्र भी दो। उयैना कहने लगा: मेरे पास तो कुछ भी नहीं है, मैं तो पहले ही बहुत गरीब हूँ। मैंने लालच किया था, उसमें भी मारा गया। लेकिन लड़का अड़ा रहा कि कुछ न कुछ तो अवश्य दो। आख़िर उयैना को अपनी चादर देनी पड़ी और इस प्रकार वह लड़का उस बंदी स्त्री को भी लेकर गया और साथ में वस्त्र भी। और जाते-जाते यह भी उस व्यक्ति उयैना से कहता गया कि तुम्हारा दिमाग़ समझ-बूझ से बिल्कुल खाली है। अवसर से लाभ उठाने की तुममें बिल्कुल क्षमता नहीं है। और उसके दूसरे साथी भी उस पर व्यंग्य और आलोचना करते रहे।

(सब्लुल् हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 393-394, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993 ई.)(ग़ज़वा-ए-हुनैन, बाशमील से, पृष्ठ 295-297, नफ़ीस एकेडमी)(दायरा मआरिफ

सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 314-315, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)(ग़ज़्वातुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी से, उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 681-680, दारुल इशाअत, 2001 ई.)

लालच से आख़िर उसे कुछ भी नहीं मिला।

बनू हवाज़िन के नेता और मालिक बिन औफ़ के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू हवाज़िन के प्रतिनिधिमंडल से उनके नेता मालिक बिन औफ़ के बारे में पूछा कि वह कहाँ है? तो उन्होंने बताया कि वह ताइफ़ में बनू सक़ीफ़ के पास है। आपने उनसे कहा कि उसे सूचना दो कि यदि वह मेरी आज्ञाकारिता स्वीकार करते हुए आ जाए तो उसके परिवार जो बंदी बन चुके थे, वे भी उसे वापस कर दिए जाएँगे। कुछ वर्णनों के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके परिवार के लिए यह विशेष आदेश दिया था कि उन्हें दास आदि के रूप में किसी को न दिया जाए और उनके रहने का प्रबंध मक्का में उम्मे अब्दुल्लाह बिन्ते अबी उमैया के यहाँ कर दिया गया। उन्होंने उसे तुरंत सूचना पहुँचाई। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आने के लिए तैयार हो गया, लेकिन बनू सक़ीफ़ से इस डर के कारण घबरा गया कि यदि उन्हें पता चल गया कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जा रहा है तो कहीं वे उसे बंदी न बना लें। इसलिए उसने एक घोड़ा और ऊँट तैयार किया और रात के अंधेरे में ताइफ़ से निकलकर जिअराना में आपकी सेवा में उपस्थित हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे उसके परिवार भी लौटा दिए और एक सौ ऊँट उपहार स्वरूप भी दिए। आपकी क्षमा और अनुग्रह देखकर वह मुसलमान हो गया और फिर सारी उम्र एक निष्ठावान मुसलमान रहा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाद में उसे कबीले हवाज़िन के मुसलमानों का शासक और उसकी सेना का सेनापति बना दिया।

(ग़ज़्वा हुनैन, बाशमील से, पृष्ठ 299-300, नफ़ीस एकेडमी)(अस-सीरतुन्नबविया लि इब्ने हिशाम, पृष्ठ 797, 'अम्र अमवाल हवाज़िन व सबायाहा', दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 2001 ई.)

यह वही मालिक बिन औफ़ था जो समस्त बनू हवाज़िन, सक़ीफ़ और अन्य कबीलों को एकत्रित करके ले आया था ताकि मुसलमानों का विनाश कर दे। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रक्त का प्यासा था, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श और क्षमा व दया की पराकाष्ठा यह है कि आप उसके मार्गदर्शन के इच्छुक थे और जब वह मार्गदर्शन चाहकर आया तो न केवल सब कुछ क्षमा कर दिया बल्कि उसे उस समय की अत्यंत मूल्यवान संपत्ति के रूप में सौ ऊँट भी प्रदान कर दिए।

इस युद्ध के बंदियों में एक महिला शैमा भी थीं, यह उनका उपनाम था, उनका वास्तविक नाम हुज़ाफ़ा था। जब वे गिरफ़्तार हुईं तो गिरफ़्तार करने वालों से कहने लगीं कि मैं तुम्हारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूध पिलाने वाली (रज़ाई) बहन हूँ, मगर सहाबा ने नहीं माना। अन्सार के एक समूह ने उन्हें पकड़ा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत किया। उसने कहा: मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! मैं आपकी दूध पिलाने वाली बहन हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: कोई पहचान है? उन्होंने दाँतों का निशान दिखाया और कहा कि आपने मुझे उस समय काटा था, अर्थात बचपन में उस समय दाँत काट लिया था जब मैं आपको अपनी गोद में उठाए हुई थी। बाद में घटना आपको भी याद आई होगी। और वे कहती हैं: हम उस समय बकरियाँ चराया करते थे और आपके दूध पिलाने वाले पिता मेरे वास्तविक पिता हैं, आपकी दूध पिलाने वाली माता मेरी वास्तविक माता है। हे अल्लाह के रसूल! स्मरण कीजिए कि मैं आपके लिए बकरियों का दूध दुहा करती थी।

आपने पहचान चिह्न से पहचान लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके लिए खड़े हो गए और अपना चोगा (चादर) बिछा दिया। फ़रमाया: इस पर बैठो। आपने उनका स्वागत किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू बहने लगे और उनसे दूध पिलाने वाले माता-पिता के बारे में पूछा। उसने बताया कि उनका देहांत हो चुका है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यदि तुम उचित समझो तो हमारे पास ठहर जाओ। तुम्हें सम्मान, आदर और प्रेम मिलेगा और यदि तुम अपने कबीले के पास वापस जाना चाहती हो तो मैं तुम्हारे साथ रिश्तेदारी का व्यवहार करता हूँ, तुम वहीं चली जाओ। उसने कहा कि मैं अपने कबीले के पास वापस जाना चाहती हूँ। बहरहाल, उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें तीन दास और एक दासी प्रदान की और उन्हें एक या दो ऊँट देने का आदेश फ़रमाया। आप उस समय हुनैन में थे। इसलिए आपने उनसे फ़रमाया: जिअराना चली जाओ और अपने कबीले के पास रहो। मैं ताइफ़ जा रहा हूँ। इसलिए वह जिअराना आ गईं। आपने जिअराना में उनसे मुलाकात की और उन्हें बकरियाँ और भेड़ें भी प्रदान कीं। एक वर्णन के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया: जो माँगोगी, तुम्हें दिया जाएगा और जो सिफ़ारिश करोगी, वह स्वीकार की जाएगी। तो उन्होंने अपने कबीले बनू सअद के एक व्यक्ति, जिसका नाम बजाद था, की सिफ़ारिश की। इस व्यक्ति ने एक मुसलमान को मारकर जला दिया था और भाग गया था, लेकिन सहाबा ने उसे पकड़ लिया था। अब जब शैमा ने उसकी क्षमा की सिफ़ारिश की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे क्षमा कर दिया।

(ग़ज़्वा हुनैन, बाशमील से, पृष्ठ 389-390, नफ़ीस एकेडमी)(सब्लुल् हुदा वर्रशाद फी सीरते ख़ैरिल इबाद, जिल्द 5, पृष्ठ 333, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993 ई.)(दायरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 318-319, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)

विस्तार तो नहीं है, लेकिन फिर आपने बाद में निश्चित रूप से उसकी दियत (रक्त-धन) आदि भी अदा की होगी।

अबू दाऊद के वर्णन के अनुसार जिअराना नामक स्थान पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूध पिलाने वाली माता का भी आपसे मिलना वर्णित हुआ है। यह कहा गया है, लेकिन यह कहते हैं कि इसकी वर्णन श्रृंखला (सनद) कमज़ोर है। (वास्तव में) माता नहीं मिली थीं। संभव है कि दूध पिलाने वाली माता का मिलना किसी अन्य अवसर का हो या वर्णनकर्ता को भूल भी लगी हो, क्योंकि सामान्य वर्णनों के अनुसार हुनैन के युद्ध से पहले ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूध पिलाने वाली माता का देहांत हो चुका था।

(ग़ज़्वा हुनैन, बाशमील से, पृष्ठ 289, नफ़ीस एकेडमी)\(सुनन अबी दाऊद, किताब अल-आदब, बाब फी बिर्रिल वालिदैन, हदीस 5144)(सीरते इब्ने कसीर, जिल्द 3, पृष्ठ 690, दारुल मअरिफ़ा, बैरूत, लबनान, 1976 ई. से उद्धृत)(फ़तहुल वदूद, जिल्द 7, पृष्ठ 410, मकतबा जाइज़ा दुबई अद-दौलिया लिल क़ुरआनिल करीम)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब मक्का से मदीना हिजरत (प्रवास) की थी, उस समय मक्का वालों ने घोषणा की थी कि जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जीवित या मृत पकड़कर लाएगा, उसे सौ ऊँट इनाम दिया जाएगा। यह घटना बहुत प्रसिद्ध है और कई बार वर्णित भी हो चुकी है। यह सुनकर सुराक़ा बिन मालिक ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पीछा किया और आप तक पहुँच गया, लेकिन उस समय चमत्कारिक रूप से अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रक्षा की और सुराक़ा को असहाय कर दिया। उस समय आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया था: हे सुराक़ा! तेरा क्या हाल होगा जब फारस के बादशाह (किसरा) के कंगन तेरे हाथों में होंगे। उस समय उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुरक्षा (अमान) की एक लिखित पत्र देने की प्रार्थना की थी। वही सुराक़ा, वही सुरक्षा-पत्र लेकर जिअराना नामक स्थान पर उपस्थित हुआ और इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(दायरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 306-307, बज़्मे इक़्बाल लाहौर से उद्धृत)

इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की एक मन्नत का भी उल्लेख मिलता है जो उन्होंने मानी थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! जाहिलियत (अज्ञानता) के काल में मैंने एक मन्नत मानी थी कि मैं मसजिदुल हराम में एक दिन इतिकाफ करूँगा, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क्या आदेश है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: आप जाइए और मन्नत पूरी कीजिए। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गए और अपनी मन्नत पूरी की।

(सहीह बुख़ारी, किताब अल-इतिकाफ, बाब मन लम यर अलैहि इज़ा

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दुरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

इतकफ़, हदीस 2042)(फ़तहुल बारी, किताब अल-मग़ाज़ी, जिल्द 8, पृष्ठ 43, क़दीमी कुतुब ख़ाना)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अभी जिअराना में ही थे कि एक रात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उमरा के इरादे से वहाँ से मक्का चले गए और विवरणों के अनुसार रात को गए और उसी रात को ही वापस आ गए। आप चूँकि बहुत थोड़े समय के लिए गए थे, इसलिए लोगों ने यही समझा कि मानो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कहीं गए ही नहीं थे।

(ग़ज़वातुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, इमाम हलबी से, उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 683, दारुल इशाअत, 2001 ई.)(उम्दतुल क़ारी, किताब अल-हज, जिल्द 9, पृष्ठ 301, दारु इहयाइत तुरास, 2003 ई.)(दायरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 375, बज़्मे इक़बाल लाहौर)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदीना वापसी के बारे में लिखा है कि ज़ुलक़दा (हिजरी महीना) के बारह दिन अभी शेष थे और बृहस्पतिवार का दिन था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना वापसी की यात्रा प्रारंभ की। इससे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अत्ताब बिन असीद को मक्का का गवर्नर नियुक्त कर चुके थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके साथ हज़रत मआज़ बिन जबल और हज़रत अबू मूसा अशअरी को पीछे छोड़ा ताकि वे लोगों को क़ुरआन और धर्म की शिक्षा दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ जानवर अपने साथ रखे ताकि रास्ते में मिलने वाले लोगों को दे सकें। आप वादी जिअराना से चले। सरफ़ से होते हुए फिर मर्रुज़ ज़हरान पहुँचे और फिर नौ दिन की यात्रा के बाद मदीना पहुँच गए। ज़ुलक़दा की तीन रातें अभी शेष थीं।

इन सभी अभियानों, मक्का की विजय, हवाज़िन की विजय और ताइफ़ वालों पर आक्रमण में दो महीने और सोलह दिन लगे।

(सब्लुल् हुदा वर्रशाद फी सीरते ख़ैरिल इबाद, जिल्द 5, पृष्ठ 406-407, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई. से उद्धृत)(ग़ज़वा हुनैन, बाशमील से, पृष्ठ 306-307, नफ़ीस एकेडमी)

पश्चिमी विद्वान (मुस्तश्रिक़ीन) आपत्तियाँ उठाते हैं। उन्होंने मक्का की विजय, हुनैन के युद्ध, ताइफ़ के युद्ध आदि के बारे में आपत्तियाँ की हैं। हालाँकि पश्चिमी विद्वानों को कोई वास्तविक बात आपत्ति योग्य नहीं मिली, तथापि उनकी एक-दो आपत्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें मैं बयान कर देता हूँ। इसलिए विलियम मॉन्टगोमरी वाट, जो वर्तमान युग का एक पश्चिमी विद्वान है, कहता है। इसका अनुवाद यह है कि: 'कुछ एक स्त्रियों को छोड़कर, जो बड़े सहाबा को दी गईं, बाकी लूट का माल और बंदी मसऊद बिन अमरो गिफ़ारी की देख-रेख में जिअराना में रखे गए।'

(Muhammad at Madina by W.Montgomery Watt Page73Chapter The Battle of Hunayn, The Consolidation of Victory Oxford University Press Karachi2006)

इसी प्रकार सर विलियम म्यूर लिखता है कि बंदियों में से तीन सुंदर स्त्रियाँ, जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास लाई गईं, आपने उनमें से एक हज़रत अली को, एक हज़रत उस्मान को और एक हज़रत उमर को प्रदान कर दीं और हज़रत उमर ने अपने हिस्से की स्त्री अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह को दे दी। बाकी दो के बारे में ज्ञात नहीं कि उनके साथ क्या हुआ। बहरहाल, वह लिखता है कि इससे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इतिहास का आंतरिक ज्ञान हो जाता है कि आप ऐसी बंदी लड़कियाँ उन्हें दे रहे हैं जिनमें से एक आपकी पत्नी के पिता हैं और दो आपकी बेटियों के पति हैं।

(The Life of Mahomet by Sir William Muir page435Chapter The Hawazinite Prisoners Released,Mahomet Presents Female Slaves to Ali,Othman and Omar London Smith,Elder,&CO.,15Waterloo Place1878)

यानी कि स्वजन-पक्षपात किया है जो पहले ही दे दिया।

फिर आपत्ति से या दुर्भावना से एक घटना प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, लेकिन उसमें भी कोई वज़न (महत्व) नहीं है, क्योंकि हुनैन के युद्ध के अवसर पर बंदियों के इस प्रकार के वितरण, जिसमें दासियों को इस प्रकार देने का वर्णन हो, का उल्लेख सीरते हलबिया और तबक़ात इब्ने सअद में नहीं मिलता। हाँ, धन के वितरण का उल्लेख मिलता है। तबक़ात इब्ने सअद में लिखा है कि उस दिन मुसलमानों को छह हज़ार बंदी मिले। मुश्रिक (बहुदेववादी) मुसलमान होकर आपके पास आए और कहा: हे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप लोगों में सबसे उत्तम हैं। आपने हमारे धन, स्त्रियों और बच्चों को गिरफ़्तार कर लिया है। आपने मुसलमानों से फ़रमाया कि जिसके पास उनमें से कुछ हो और उसका हृदय वापस करने पर राजी हो, तो यह मार्ग उत्तम है। जो राजी न हो, तो वह हमें दे दे, यह हमपर ऋण होगा। जब हम कुछ प्राप्त करेंगे तो यह ऋण चुका देंगे। उन्होंने कहा: हे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम राजी हैं और स्वीकार करते हैं। आपने फ़रमाया: मुझे ज्ञात नहीं, शायद तुममें से कोई ऐसा मौजूद हो जो राजी न हो, जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है। अतः तुम अपने प्रतिनिधि भेजो जो हमारे पास उसे प्रस्तुत करें। आपके पास प्रतिनिधि प्रस्तुत किए गए कि वे लोग राजी हैं और स्वीकार करते हैं।

(अत-तबक़ातुल कुबरा लि इब्ने सअद, अल-जुज़ 2, पृष्ठ 118, 'ग़ज़वा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इला हुनैन', दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1990 ई.)

पहले हुनैन के युद्ध के बंदियों के प्रबंधन और उनकी मुक्ति के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दयालुतापूर्ण रणनीति के बारे में प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथों के हवाले से विस्तार पहले ही वर्णित हो चुका है। इस ऐतिहासिक सच्चाई से स्वयं सर विलियम म्यूर भी भली-भाँति परिचित है। इसी कारण म्यूर इस विस्तार को, अपनी आपत्तिजनक शैली में वर्णन करने के बावजूद, इस सच्चाई के व्यक्त करने से रुक नहीं सका। वह लिखता है कि हुनैन के सभी बंदी मुक्त कर दिए गए थे।

(The Life of Mahomet by Sir William Muir page435Chapter The Hawazinite Prisoners Released,Mahomet Presents Female Slaves to Ali,Othman and Omar London Smith,Elder,&CO.,15Waterloo Place1878)

उसका यह कथन स्वयं ही उसकी आपत्ति का खंडन करता है। इस युद्ध की घटनाओं की समीक्षा यह बताती है कि आरंभ में बंदियों को देख-रेख के लिए सहाबा के हवाले किया गया था, लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट है कि प्रबंधन को अंतिम रूप देकर उन सभी को हज़रत मसऊद बिन अमरो गिफ़ारी की देख-रेख में जिअराना भेज दिया गया था। फिर जब ताइफ़ से वापस आकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हवाज़िन वालों से वार्ता की, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विशेष दयालुतापूर्ण रणनीति के साथ हर व्यक्ति के हवाले बंदी को मुक्त करा दिया था। पहले वर्णित विस्तार में यह सब कुछ बयान हो चुका है, मैंने पहले भी बयान किया है। और प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वान मॉन्टगोमरी वाट इस सच्चाई से भली-भाँति परिचित है, क्योंकि वह उसी स्थान पर लिखता है कि: 'ऐसा प्रतीत होता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के बहुत समय बाद सुनने वालों ने ऐसी कहानियों में अतिरिक्त बातें जोड़ दी हैं या संभव है कि ये कहानियाँ स्वयं गढ़ी हुई हों।'

(Muhammad At Medina by W.Montgomery Watt page73Chapter The Battle of Hunayn,The Consolidation of Victory Oxford University Press Karachi2006)

एक और आपत्ति मारगोलियोथ ने ताइफ़ के नेता मालिक बिन औफ़ नसरी के बारे में की है कि उसे, यानी मालिक बिन औफ़ को, जबरन मुसलमान बना लिया गया था।

(Mohammed And The Rise of Islam by D.S Margoliouth Page 403 Chapter The Taking of Meccah G.P Putnam's Sons New York and London The Knickerbocker Press Third Edition)

मारगोलियोथ की यह आपत्ति बिल्कुल निराधार है और पश्चिमी विद्वानों के हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी के प्रति सामान्य रवैये का उदाहरण है कि किस प्रकार उस 'सारे संसार के लिए दया' की कोमलता के घटनाक्रम को भी जबरदस्ती का रंग दिया जाता है, जिसका वास्तविकता से बिल्कुल कोई संबंध नहीं है। इस घटना का विवरण सीरते इब्ने हिशाम में दर्ज है कि जब हज़रत 'सारे संसार के लिए दया' सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रतिनिधिमंडल हवाज़िन की दया की अपील स्वीकार करते हुए उनके बंदी और धन-संपत्ति उन्हें वापस कर दिए, तो जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है, आपको ताइफ़ में उपस्थित नेता मालिक बिन औफ़ का भी स्मरण आया और आपने उनसे पूछा: मालिक बिन औफ़ के बारे में बताओ, उसका क्या हाल है? निवेदन किया गया: वह सक़ीफ़ के साथ ताइफ़ में है। तो इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उसी दया का एक बार फिर मालिक बिन औफ़ के पक्ष में प्रदर्शन हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जाकर उसे सूचना दो कि यदि वह इस्लाम स्वीकार कर लेता है तो उसके परिवार और धन-संपत्ति उसे लौटा दिए जाएँगे। और इसी पर बस नहीं, बल्कि फ़रमाया कि उसे एक सौ ऊँट भी दिए जाएँगे।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

विजेता हैं। मालिक बिन औफ़ से आपको कोई लोभ या लाभ अपेक्षित नहीं है और किसी भी नियम के तहत मालिक बिन औफ़ के संबंध में आप एक कण मात्र के भी उत्तरदायी नहीं हैं, लेकिन अपने सनातन दया के भाव के साथ उसे इस्लाम स्वीकार करने का संदेश भिजवाते हैं और उसके परिवार, धन-संपत्ति और ऊँट प्रदान करने का वादा फ़रमाते हैं।

दूसरी ओर, मालिक के हृदय में भी, ऐसा प्रतीत होता है, इस्लाम पहले ही घर कर चुका था। इसलिए जब उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह संदेश मिला तो वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलने के लिए रवाना हो गया। ताइफ़ से चलकर जिअराना या मक्का में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उसकी मुलाकात हुई। मालिक अब मुसलमान हो गए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें उनके परिवार, उनकी संपत्ति और अतिरिक्त एक सौ ऊँट प्रदान फरमाए और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इस्लाम स्वीकार करते समय उन्होंने कविता के शेर भी कहे, जिनमें से एक शेर यह था:

'मा इन रअयतु वला समिअतु बिमिस्लिही फिन्नासि कुल्लिहिम बिमिस्लि मुहम्मद'

'कि मैंने सभी लोगों में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा व्यक्ति न कभी देखा है और न कभी उस स्तर के व्यक्ति के विषय में सुना है।'

(अस-सीरतुन्नबविया लि इब्ने हिशाम, पृष्ठ 797, 'अम्र अमवाल हवाज़िन व सबायाहा'..., दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 2001 ई.)

तो ये थे हुनैन के समस्त घटनाक्रम। बाद में शेष सैन्य टुकड़ियों (सरियात) के बारे में, इनशा अल्लाह, बयान किया जाएगा।

इस समय मैं दो स्वर्गवासी व्यक्तियों का स्मरण करना चाहता हूँ। उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा भी बाद में पढ़वाऊँगा। पहले हैं माननीय डॉक्टर लईक़ अहमद फर्रुख़ साहिब। ये कनाडा में थे। वहाँ उनका देहांत हुआ। उन्होंने कई वर्षों तक 'वाक़िफ-ए-जिंदगी' (जीवन-समर्पित) के रूप में डॉक्टर के पद पर अफ्रीका में सेवा निभाई है। उनका गत दिनों तिरासी वर्ष की आयु में देहांत हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (निश्चय ही हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं)। स्वर्गीय वसीयत करने वाले (मूसी) भी थे। उनके पीछे उनकी पत्नी, एक बेटा और दो बेटियाँ हैं। मजलिस नुसरत जहाँ के तहत 1974 ई. में इन्हें घाना भेजा गया। 1978 ई. तक वहाँ सेंट्रल हस्पताल में सेवा निभाते रहे। तीन वर्ष के जीवन-समर्पण (वक़्फ) की अवधि पूरी होने के बाद, उनकी स्वास्थ्य की खराबी के कारण उन्होंने विश्राम की इच्छा जताई, तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्लाहि अलैहि ने उन्हें एक वर्ष और काम करने के लिए कहा। बड़े-बड़े जटिल (Complicated) केस उनके पास आते थे। जो मुश्किल केस होते थे, वे उनके पास आते थे। ये कुछ केस दूसरे हस्पताल, सरकारी हस्पताल में भेजने (refer) का सुझाव देते थे, लेकिन मरीज़ कहता था: नहीं, यदि मुझे इलाज कराना है तो अहमदिया हस्पताल से और अहमदी डॉक्टर से कराना है। और कई ऐसे ऑपरेशन हुए जो अल्लाह तआला के अनुग्रह से सफल हुए, जिनकी आशा भी नहीं होती थी। बहरहाल, ऐसा ही एक केस आया जो उदर-भंग (Strangulated Hernia) का था। बहुत मुश्किल केस था, उसे आपने किया और अल्लाह तआला से प्रार्थना की। अल्लाह तआला ने सफ़लता प्रदान की। 84 ई. में ये दोबारा अफ्रीका में गाम्बिया भेजे गए। और 1993 ई. तक उन्होंने वहाँ जीवन समर्पित किया और बड़ी समर्पण की भावना के साथ सेवा की।

उनके बेटे ने लिखा है और बहुत सही बातें लिखी हैं कि वे बहुत शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। प्रार्थना करने वाले, विनम्रता और नम्रता तथा धैर्य और स्थिरता की मिसाल थे। पूरी ज़िंदगी मानवता की सेवा में बिताई। जीवन-समर्पण (वक़्फ) के दौरान, खासतौर पर गाम्बिया के छोटे और पिछड़े गाँव अन्जवारा में हालात बहुत मुश्किल थे। खाने को भी कुछ नहीं होता था, गर्मी भी थी। बिजली, पानी कुछ भी नहीं था, लेकिन वहाँ सेवा करते रहे। कहते हैं: मैं भी बीमार था और मेरे पैरों में छाले निकल आते थे, तो मुझे उठाकर स्कूल ले जाते थे। गाड़ी में बिठाते और वहाँ स्कूल में छोड़कर जाते, लेकिन कभी शिकायत नहीं की। फिर कहते हैं कि जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमतुल्लाहि अलैहि ने 1988 ई. में वहाँ दौरा किया, तो खास तौर पर उनके घर गए और घर में वहाँ बैठने की कुर्सियाँ भी नहीं थीं, लेकिन बहरहाल हुज़ूर ने कहा कि मैं आपके साथ भोजन भी करूँगा। और बाकी सभी स्टाफ़ को कहा कि बाहर जाओ। और यह कहते हैं कि यह उनके लिए बड़ा सम्मान था, हमारे लिए बड़ी सफ़लता का कारण था। लाहौर में नौकरी के दौरान एक घटना बयान किया करते थे कि मेरा ब्लड प्रेशर बहुत लो (निम्न) हो गया और मैं मेज़ पर लेट गया और मुझे लग रहा था कि मृत्यु होने वाली है। डॉक्टर अपने आप पर कुछ भ्रम भी करते हैं और पता भी होता है। लेकिन उसी दौरान मुझे आवाज़ आई कि अभी समय नहीं आया। कनाडा जाकर आएगा। और कहते हैं, अल्लाह तआला ने फिर अद्भुत रीति से कई वर्षों बाद उसे वहाँ पूरा किया।

एक बार जब ये घाना से वापस आए, तो 1978 ई. में उनकी जमाअत का प्रतिनिधिमंडल ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्लाहि अलैहि से मिलने गया। ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने कहा: तुम वापस आ गए हो? मैं तुम्हें दोबारा भेजूँगा जहाँ से आए हो। तो कहते हैं, मुझे समझ नहीं आई, क्योंकि मैं तो दोबारा जीवन-समर्पण (वक़्फ़) नहीं कर रहा था। लेकिन 1983 ई. में सैक्रेटरी नुसरत जहाँ रबवा का पत्र मिला कि तुम्हारी नियुक्ति विचाराधीन है, इसलिए आओ। और 1984 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमतुल्लाहि अलैहि ने उन्हें दोबारा गाम्बिया, अफ्रीका भेज दिया। और कहते हैं, यह मुझे अजीब लगा। मेरे लिए एक चमत्कार (मोअज्ज़ा) था कि एक ख़लीफ़ा ने एक बात कही, दूसरे ने उसे पूरा कर दिया।

वहाब आदम साहिब मरहूम, पूर्व अमीर घाना कहा करते थे कि डॉक्टर साहिब जब भी किसी मरीज़ की नाज़ुक हालत देखते तो फौरन अतिरिक्त नमाज़ (नफ़िल) पढ़ने लग जाते थे।

मैं भी उनके प्रवास के दौरान घाना में रहा हूँ। मैंने उनके साथ समय बिताया है। मैंने उन्हें देखा है। अत्यंत शालीन, विनम्र और सेवा करने वाले व्यक्ति थे। जीवन-समर्पित लोगों (वाक़िफ़ीन) का बहुत आदर करने वाले थे। उनमें अतिथि-सत्कार कूट-कूट कर भरा हुआ था, बल्कि दोनों पति-पत्नी अतिथि-सत्कार में निपुण थे। बहुत सी विशेषताएँ ऐसी थीं जो बहुत कम लोगों में होती हैं।

दाऊद हनीफ़ साहिब, जो आजकल जामिआ कनाडा के प्रिंसिपल हैं, गाम्बिया में अमीर जमाअत (समुदाय के प्रमुख) हुआ करते थे। कहते हैं: वे हर समय मानवता की सेवा के लिए तैयार रहते थे। न रात देखते, न दिन देखते, सिर्फ़ यह देखते कि कोई मुसीबतज़दा है तो फौरन उसकी सेवा करनी है। जिस इलाके के हस्पताल में उन्हें लगाया गया, वहाँ छोटा सा इलाका था। दो नावें (फेरियाँ) बदलकर वहाँ जाना पड़ता था और रहने का स्थान भी उनका एक पुराने, उपेक्षित स्टोर में था, जिसकी सफाई करके घर के रूप में बनाया गया था, लेकिन बड़ी खुशी से वहाँ रहे। न बिजली थी, न पानी था, न टेलीफोन था। कुएँ या नदी से स्वयं पानी लाना पड़ता था। मोमबत्ती या लालटीन का उपयोग किया जाता था। सर्जरी आमतौर पर दिन के समय सूरज की रोशनी में करते थे और अपने ऑपरेशन के उपकरणों को गैस के चूल्हे पर निर्जीमीकृत (Sterilize) कर लिया करते थे। ऐसी परिस्थितियों में सेवाएँ निभाते रहे। आजकल तो डॉक्टर इसको मानने को तैयार ही नहीं होंगे। उन्हें पता भी नहीं है कि यह किस प्रकार होता है।

ये वहीं रहते थे कि एक बार चोरों ने वहाँ एक घर में डकैती की और लोगों का शोर मच गया। लोगों ने चोरों को घेर लिया। इस पर उन्होंने अपने 'कटलस' (एक तलवार जैसा हथियार) निकाला और एक व्यक्ति पर प्रहार किया, उसके सिर पर गंभीर घाव आया। तुरंत रात को डॉक्टर साहिब को बुलाया गया। उन्होंने तुरंत उसकी सर्जरी की और टॉर्च लाइट और मोमबत्ती की रोशनी में उसका ऑपरेशन किया, जिसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती। और अल्लाह के अनुग्रह से सर्जरी सफल रही और वह मरीज़ बच गया।

एक बार एक गरीब व्यक्ति डॉक्टर साहिब के पास आया। वह कहता था कि मेरा गाँव बहुत दूर है। परिवहन भी उपलब्ध नहीं है। मरीज़ को ला नहीं सकता। आप कृपा करें, मरीज़ को देख लें। वे उसी समय उसके साथ चल पड़े और मरीज़ को देखा और उसका इलाज किया। वह ठीक हो गया। उस इलाके का जो संसद सदस्य (मेंबर ऑफ पार्लियामेंट) था, उसे यह पता लगा तो वह इस बात के लिए आपका धन्यवाद अदा करने आपके क्लिनिक में आया और जब

भी वह आता, हमेशा आपसे मिलने के लिए अवश्य आता और इस बात का इज़हार करता कि वास्तविक रूप में मानवता की सेवा आप ही कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार फरमाए। उनके स्तर ऊँचे फरमाए। उनकी पत्नी और बच्चों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे और उन्हें धैर्य और साहस प्रदान करे।

दूसरी नमाज़-ए-जनाज़ा हमीद अहमद ग़ौरी साहिब (हैदराबाद, भारत) की है। इनका भी गत दिनों चौहत्तर वर्ष की आयु में देहांत हो गया था। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। स्वर्गीय वसीयत करने वाले (मूसी) थे। उनके पीछे उनकी पत्नी, एक बेटी और चार बेटे हैं। पोते-पोतियाँ हैं। सभी बच्चे किसी न किसी रूप में जमाअत (समुदाय) की सेवा कर रहे हैं। इनआम ग़ौरी साहिब (नाज़िर आला क़ादियान) के छोटे भाई थे। समद ग़ौरी साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला और सदर जमाअत अल्बानिया) के ये पिता थे। वे रोज़े और नमाज़ के पाबंद, तहज्जुद पढ़ने वाले थे। आपको पवित्र क़ुरआन से अत्यधिक प्रेम था, पढ़ते रहते थे। कंठस्थ करने की भी कोशिश करते थे। जब तक स्वास्थ्य रहा, अतिरिक्त नमाज़ (नवाफ़िल) अदा करने के बाद फज्र से पहले मुहल्ले के अहमदी घरों में जाकर नमाज़ के लिए दस्तक देते हुए मस्जिद जाते थे। फज्र की नमाज़ के लिए लोगों को बुलाते। हज और उमरे की सफ़लता भी उन्हें प्राप्त हुई। वे ख़िलाफ़त के आदेशों पर चलने वाले थे और हर छोटे से छोटा आदेश या बड़े से बड़ा आदेश भी होता था, तो कोशिश यह होती थी कि मैं उस पर अमल करूँ। और क्योंकि जमाअत में भाषण (खुतबात) भी देते थे, तो कहते कि पहले स्वयं अमल करूँगा और फिर जमाअत को बताऊँगा। और इस पर ये अल्लाह तआला के अनुग्रह से सफल भी होते थे।

होम्योपैथिक इलाज भी किया करते थे। घर में दवाइयों का भंडार रखा हुआ था। मरीज़ों को मुफ्त दिया करते थे। आर्थिक क़ुर्बानी (योगदान) में अग्रणी रहते। एक निकट संबंधी ने बताया कि मेरा बकाया रह गया था, आय का हिस्सा। तो स्वर्गीय सैक्रेटरी माल के पास गए और उसकी ओर से वह चंदा अदा कर दिया और उसके बाद चेतावनी दी कि आगे से यह तुम्हारा बकाया न रहे। पहले चंदा दिया करो। बहुत रिश्तेदारी का ख्याल रखने वाले थे और बार-बार अपने रिश्तेदारों को घर पर एकत्रित करते थे। उनके दुख-सुख में शरीक होते थे। केंद्रीय प्रतिनिधियों और प्रचारकों (मुबल्लेग़ीन) की बहुत इज़्ज़त करते थे। नाइब अमीर हैदराबाद और सैक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन, अपने हल्के (क्षेत्र) के सदर जमाअत भी रहे। नाज़िम अन्सारुल्लाह भी रहे। नाइब सदर मजलिस अन्सारुल्लाह जनूबी हिन्द (दक्षिण भारत) के रूप में भी सेवा की सफ़लता मिली। बहरहाल, उनकी काफी जमाअती सेवाएँ भी हैं। यहाँ (क़ादियान) भी एक बार जलसे (वार्षिक सम्मेलन) में शामिल हो चुके हैं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार फरमाए। उनके बेटे जनाजे में शामिल नहीं हो सके थे, जो अल्बानिया में मुबल्लिग़ सिलसिला (प्रचारक) हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी धैर्य और साहस प्रदान करे। बहरहाल, उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा बाद में पढ़वाऊँगा।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनैशनल, 24 अक्टूबर 2025, पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

उससे लापरवाह रहे हैं, उन लोगों ने तक़्वा से काम नहीं लिया। और अल्लाह तआला अपने पवित्र कथन (क़ुरआन) में फ़रमाता है: 'निश्चय ही अल्लाह ईश-भय रखने वालों (मुत्तक़ीन) ही (के कर्म) को स्वीकार करता है' (सूरा अल-माइदा: 28)। अतः इसीलिए कहा गया है कि ऐसे व्यक्ति के पीछे नमाज़ न पढ़ो जिसकी नमाज़ स्वयं स्वीकार्यता के स्तर तक पहुँचने वाली नहीं है।"

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को न मानने का परिणाम

"प्राचीन काल से ही धार्मिक विद्वानों का यही मत रहा है कि जो व्यक्ति सत्य का विरोध करता है, धीरे-धीरे उसका ईमान छिन जाता है। जो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को न माने वह काफ़िर है, परन्तु जो महदी और मसीह को न माने उसका भी ईमान छिन जाएगा। परिणाम एक ही है। पहले विरोध होता है, फिर अजनबीपन, फिर शत्रुता, फिर अतिवाद और अंततः ईमान छिन जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 96,97, संस्करण 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

## अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमअात इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

## नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

### ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफ़त के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

के अयोग्य बना देती हैं। और यदि वह किसी गंभीर आघात से मरा हो, उदाहरण के लिए कुएँ में गिरकर या जानवरों की आपसी लड़ाई में, तब भी उसके रक्त में विष उत्पन्न हो जाता है जो उसके मांस को उपयोग के अयोग्य बना देता है। और रक्त तो स्वयं ही ऐसी चीज़ है जो कई प्रकार के विष अपने आप में रखता है और चिकित्सकीय दृष्टिकोण से इसका उपयोग स्वास्थ्य को नष्ट करने वाला है।"

"सूअर के मांस का भी यही हाल है। इसके उपयोग से भी कई प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं और फिर सूअर में कुछ नैतिक दोष भी पाए जाते हैं जो उसका मांस खाने वालों में स्थानांतरित हो जाते हैं। और जो चीज़ अल्लाह के अलावा किसी अन्य के नाम पर ज़बह की जाए, उसका उपयोग मनुष्य को निर्लज्ज बना देता है और उसके हृदय से अल्लाह तआला का सम्मान दूर कर देता है। इसी प्रकार पेय पदार्थों में से इस्लाम ने शराब को वर्जित घोषित किया है क्योंकि वह मानवीय बुद्धि पर पर्दा डालती है और उसकी प्रतिभा और ज्ञान को हानि पहुँचाती है। संक्षेप में, अल्लाह तआला ने जितनी भी चीज़ों को वर्जित घोषित किया है, उसका कारण उनके शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक हानिकारक प्रभाव हैं और केवल ऐसी ही वस्तुओं के"

"खाने को उचित घोषित किया जो मनुष्य की शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का कारण बनें। और फिर हलाल वस्तुओं में से भी पवित्र और उत्तम चीज़ों (तय्यिबात) के उपयोग पर अधिक ज़ोर दिया है, अर्थात् ऐसी वस्तुओं पर जो मनुष्य के स्वास्थ्य और उसकी प्रकृति के अनुकूल हों और जिनके उपयोग से उसे कोई हानि होने का भय न हो। इससे स्पष्ट है कि इस्लाम ने नैतिकता पर भोजन के प्रभाव को स्वीकार किया है और इसे विशेष प्रतिबंधों और शर्तों से जोड़कर नैतिकता प्राप्त करने का एक नया द्वार खोल दिया है।"

(तफ़्सीर कबीर जिल्द 6, पृष्ठ 180, प्रकाशन क़ादियान 2010)

★ ★ ★

ख़ुदा तआला कौन है और क्या है? बिग बैंग से कायनात का आग़ाज़ हुआ और उस वक़्त से कायनात ख़ुद-ब-ख़ुद चल रही है तो क्या पूरी कायनात ही ख़ुदा है?
रूह की हक़ीक़त और उसके जन्नत में सफ़र करने के बारे में रहनुमाई
रोज़े के दौरान दवाओं के इस्तेमाल के बारे में रहनुमाई
मस्जिद में प्लास्टिक की टोपियाँ रखने के बारे में रहनुमाई
क्या दर्स के मध्य में सुन्नतें अदा की जा सकती हैं?
जमाअत अहमदिया शरीयत के तौर पर कितने कलमों पर यकीन रखती है?
मोमिन औरतों के लिए जन्नत में क्या है? साथ ही क्या औरत सिर्फ मर्द के लिए ही पैदा की गई है?
अमानतन दफनाए गए शख़्स की लाश को जब बिहिशती कब्रिस्तान में शिफ्ट किया जाता है तो उसकी दोबारा नमाज़-ए-जनाज़ा क्यों पढ़ी जाती है?

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 53-54)

प्रश्न: : इंडिया से एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में तहरीर किया कि ख़ुदा तआला कौन है और क्या है? बिग बैंग से कायनात का आग़ाज़ हुआ और उस वक़्त से कायनात ख़ुद-ब-ख़ुद चल रही है तो क्या पूरी कायनात ही ख़ुदा है? कहा जाता है कि मरने के बाद हम ख़ुदा तआला के पास चले जाते हैं, यह किस तरह होता है? रूह की हक़ीक़त क्या है और जब जन्नत और जहन्नम कायनात के मुख़्तलिफ़ हिस्से हैं तो क्या रूह उनके दरमियान सफ़र कर सकती है यानी एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल हो सकती है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 10 मार्च 2022 में इन प्रश्नों के निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाए। हज़ूर ने फ़रमाया:

उत्तर: इस्लामी तालीमात, जिन पर हमारा कामिल ईमान है उन के मुताबिक़ ख़ुदा तआला की ज़ात वह हस्ती है जो इस कायनात के सारे निज़ाम को चला रही है। इसलिए जब हम यह कहते हैं कि हर चीज़ को किसी न किसी ज़ात या हस्ती ने बनाया है और साइंस भी इस बात को मानती है कि कायनात की हर चीज़ ख़ुद-ब-ख़ुद नहीं है बल्कि उसका कोई न कोई बनाने वाला ज़रूर है। साइंस उसे नेचर कहती है और हम अल्लाह तआला और उसके रसूलों की बताई हुई तालीमात के मुताबिक़ उस हस्ती को ख़ुदा तआला की ज़ात मानते हैं।

बाक़ी ख़ुदा तआला की ला-महदूद हस्ती इंसानी महदूद इल्म से बहुत बाला और बरतर है। उसके विषय में हमारा ईमान वही है जो क़ुरआन करीम ने हमें अता फ़रमाया है कि कुल हुवल्लाहो अहद। अल्लाहुस्समद। लम यलिद व लम यूलद। व लम यकुन लहू कुफ़ुवन अहद। (सूरतुल इख़्लॉस) अर्थात तू कह दे कि अल्लाह अपनी ज़ात में अकेला है। अल्लाह वह हस्ती है जिसके सब मुहताज हैं (और वह किसी का मुहताज नहीं)। न उसने किसी को जना है और न वह जना गया है। और उसका कभी कोई हमसर नहीं हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की हस्ती के बारे में फ़रमाते हैं: "ख़ुदा अपनी ज़ात और सिफ़ात और जलाल में एक है कोई उसका शरीक नहीं। सब उसके मुहताज हैं। ज़र्रा-ज़र्रा उससे ज़िंदगी पाता है। वह कुल चीज़ों के लिए मब्दा-ए-फ़ैज़ है और आप किसी से फ़ैज़याब नहीं। वह न किसी का बेटा है और न किसी का बाप और कैसे हो कि उसका कोई हम-ज़ात नहीं।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 417)

"तुम्हारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अपनी ज़ात और सिफ़ात में वाहिद है न कोई ज़ात उसकी ज़ात जैसी अज़ली और अबदी यानी अनादी और अकाल है न किसी चीज़ की सिफ़ात उसकी सिफ़ात की मानिंद हैं। इंसान का इल्म किसी मुअल्लिम का मुहताज है और फिर महदूद है मगर उसका इल्म किसी मुअल्लिम का मुहताज नहीं और बा-एन हमा ग़ैर-महदूद है।'

' (लेक्चर लाहौर, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 155,154)

"याद रखो कि इंसान की हरगिज़ यह ताक़त नहीं है कि उन सब दक़ीक़ दर दक़ीक़ ख़ुदा के कामों को दरयाफ़्त कर सके बल्कि ख़ुदा के काम अक़्ल और फ़हम और क़ियास से बरतर हैं। और इंसान को सिर्फ़ अपने इस क़दर इल्म पर मग़रूर नहीं होना चाहिए कि उसको किसी हद तक सिलसिला इलल मअलूलात का मअलूम (कारण और प्रभाव)हो गया है क्योंकि इंसान का वह इल्म निहायत ही महदूद है जैसा कि समंदर के एक क़तरे में से करोड़वाँ हिस्सा क़तरे का। और हक़ बात यह है कि जैसा कि ख़ुदा तआला ख़ुद नापायदा-किनार है ऐसा ही उसके काम भी नापायदा-किनार हैं और उसके हर एक काम की असलियत तक पहुँचना इंसानी ताक़त से बरतर और बुलंदतर है...हम ऐसे ख़ुदा को नहीं मानते जिसकी क़ुदरतें सिर्फ़ हमारी अक़्ल और क़ियास तक महदूद हैं और आगे कुछ नहीं बल्कि हम उस ख़ुदा को मानते हैं जिसकी क़ुदरतें उसकी ज़ात की तरह ग़ैर-महदूद और नापायदा-किनार और ग़ैर-मुतनाही हैं।"

(चश्मा-ए-मअरिफ़त, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23 पृष्ठ 280 ता 282)

"फ़लासफ़र जैसा कि मैंने पहले कहा है आसमान और ज़मीन को देख कर और दूसरे मसूआत की तरतीब-ए-अब्लग़-ओ-मुहकम पर नज़र कर के सिर्फ़ इतना बताता है कि कोई साने होना चाहिए मगर मैं उससे बुलंदतर मक़ाम पर ले जाता हूँ और अपनी ज़ाती तजरबों की बिना पर कहता हूँ कि ख़ुदा है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द दोम पृष्ठ 357 प्रकाशन 2016)

आपका दूसरा प्रश्न: इंसान की मौत के बारे में है। तो मौत की हक़ीक़त यह है कि जन्म के वक़्त अल्लाह तआला इंसानी जिस्म में जो रूह डालता है, वफ़ात के वक़्त वह रूह उस फ़ानी जिस्म को छोड़ देती है। और जिस्म उसी दुनिया में ही रह जाता है। चाहे वह इंसान पानी में डूब कर मरे, चाहे वफ़ात के बाद उस जिस्म को ज़मीन में दफ़्ना दिया जाए या जला दिया जाए या दरिंदों परिंदों को खिला दिया जाए। और इंसानी रूह दूसरे आलम में जिसे आलम-ए-बरज़ख़ कहा जाता है चली जाती है, जहाँ उसे अपने दुनवी आमाल के मुताबिक़ नूर या तारीकी का एक नया जिस्म मिलता है।

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रूह और जिस्म के इस तअल्लुक़ को बयान करते हुए फ़रमाते हैं: "जब यह नापाएदार तरकीब-ए-इंसानी तफ़र्रुक़-पज़ीर हो जाती है और रूह अलग और जिस्म अलग हो जाता है और जैसा कि देखा गया है जिस्म किसी गढ़े में डाल दिया जाता है और रूह भी एक क़िस्म के गढ़े में पड़ जाती है...गो मौत के बाद यह फ़ानी जिस्म रूह से अलग हो जाता है मगर आलम-ए-बरज़ख़ में हर एक रूह को किसी क़दर अपने आमाल का मज़ा चखने के लिए जिस्म मिलता है। वह जिस्म उस जिस्म की क़िस्म में से नहीं होता बल्कि एक नूर से या एक तारीकी से जैसा कि आमाल की सूरत हो जिस्म-ए-तैय्यार होता है। गोया कि उस आलम में इंसान की अमली हालतें जिस्म का काम देती हैं। ऐसा ही ख़ुदा के कलाम में बार-बार ज़िक्र आया है और बाज़ जिस्म नूरानी और बाज़ ज़ल्मानी क़रार दिए हैं जो आमाल की रोशनी या आमाल की ज़ल्मत से तैय्यार होते हैं। अगरचे यह राज़ एक निहायत दक़ीक़ राज़ है मगर ग़ैर-मअक़ूल नहीं...लेकिन जिन को आलम-ए-मकाशिफ़ात में से कुछ हिस्सा है वह इस क़िस्म के जिस्म को जो आमाल से तैय्यार होता है तअज्जुब और इस्तिबआद की निगह से नहीं देखेंगे बल्कि इस मज़मून से लज़्ज़त उठाएँगे। ग़रज़ यह जिस्म जो आमाल की कैफ़ियत से मिलता है यही आलम-ए-बरज़ख़ में नेक-ओ-बद की जज़ा का मूजिब हो जाता है।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 403 और 405)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस इक़्तिबास में रूह के एक क़िस्म के गढ़े में पड़ने का जो फ़रमाया है वह दरअस्ल सूरत अबस की उस आयत की तरफ

इशारा है कि सुम्मा अमातहू फ़ अक़्बरह। (सूरत अबस:22) यानी अल्लाह तआला हर इंसान पर मौत वारद करता है और फिर उसे क़ब्र में रखता है।

अब ज़ाहिर है कि दुनिया में हर इंसान को मिट्टी के ढेर वाली क़ब्र मयस्सर नहीं आती क्योंकि करोड़ों मुर्दे जलाए जाते हैं और दफ़न नहीं किए जाते। लाखों इंसान डूब कर मरते हैं। हज़ारों इंसानों को जंगल के दरिंदे खा कर ख़त्म कर देते हैं। तो फिर हर इंसान के विषय में यह किस तरह कहा जा सकता है कि उसे ख़ुदा क़ब्र में रखता है? यहाँ क़ब्र से मुराद वह रूहानी क़यामगाह है जहाँ मरने के बाद और कामिल हिसाब-किताब से पहले इंसान की रूह रखी जाती है।

बाक़ी किसी रूह का जन्नत और जहन्नम में एक जगह से दूसरी जगह जाने का जहाँ तक प्रश्न: है तो इस बारे में पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि रूह भी अल्लाह तआला ही के हुक्म के ताबे है, अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकती। इसलिए यहूद ने रूह के बारे में जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से प्रश्न: किया तो अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाया कुलिर्रूहो मिन अम्रि रब्बी। (सूरत बनी इसराईल:86) यानी उन्हें कह दो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है।

दूसरा क़ुरआन करीम में उख़रवी ज़िंदगी में मोमिनों और काफ़िरों के आमालनामों के लिए दो अल्फ़ाज़ सिज्जीन और इल्लिय्यीन आए हैं। इन अल्फ़ाज़ की तफ़्सीर करते हुए हज़रत मुस्लिह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हु फ़रमाते हैं: सिज्जीन का लफ़्ज़ जो कुफ़्फ़ार के लिए इस्तेमाल हुआ था मुफ़रद था मगर इल्लिय्यीन का लफ़्ज़ जो मोमिनों के लिए इस्तेमाल हुआ है वह जमा का लफ़्ज़ है। इस फ़र्क़ से उस तरफ़ इशारा किया गया है कि काफ़िर की सज़ा को अल्लाह तआला बढ़ाता नहीं मगर मोमिन के इनाम को बढ़ाता चला जाता है जिस की वजह से काफ़िर तो एक ही क़ैदख़ाने में पड़ा रहता है लेकिन मोमिन घर बदलता जाता है। एक घर के बाद उससे आला घर उसे मिलता है और उसके बाद उससे आला घर। इसी तरह ख़ुदा तआला उसे कई दुनियाओं की सैर करा देता है इस लिए मोमिन के घर कई होंगे और काफ़िर का घर एक।

(तफ़्सीर कबीर जिल्द 10 पृष्ठ 311, 312)

फिर क़ुरआन करीम में अहल-ए-जन्नत और अहल-ए-जहन्नम का जहाँ ज़िक्र किया गया है, वहाँ उन दोनों के दरमियान एक रोक के हाएल होने का भी ज़िक्र किया गया, जो इस बात का सबूत है कि जन्नती और जहन्नमी एक दूसरे से नहीं मिल सकेंगे। (सूरतुल आरफ़:47)

लेकिन जहाँ तक मुख़्तलिफ़ दरजात वाले जन्नतियों के आपस में मिलने-जुलने का मामला है तो क़ुरआन-ओ-हदीस में जन्नत के मुख़्तलिफ़ मुक़ाम और मदारिज का तो ज़िक्र हुआ है लेकिन जन्नत के इन मुख़्तलिफ़ मुक़ाम और मदारिज में रहने वालों के आपस में मिलने-जुलने में किसी रोक-टोक का कोई ज़िक्र नहीं आया। बल्कि उसके बर-अक्स अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद भी ईमान के मामले में उन के पीछे चली है हम आला जन्नतों में उन की औलाद को भी उन के साथ जमा कर देंगे और उन के बाप-दादाओं के अमलों में भी कोई कमी नहीं करेंगे। (सूरतुत्-तूर:22)

अतः क़ुरआन करीम के इन मज़ामीन से यह बात साबित होती है कि नेक रूहें अल्लाह तआला के इज़्न से एक जगह से दूसरी जगह जा सकेंगी और एक दूसरे से मेल-मुलाक़ात कर सकेंगी। लेकिन बद रूहें जो जहन्नम में अपनी सज़ा भुगत रही होंगी वह अपनी सज़ा पूरी होने तक उसी क़ैदख़ाने में मुक़य्यद रहेंगी और जब उन की सज़ा पूरी हो जाएगी तो अल्लाह तआला की रहमत की बदौलत वह भी जन्नत में चली जाएँगी।

प्रश्न: : यूके से एक डॉक्टर साहिबा ने हॉरमोन पैचेज़, कॉन्ट्रासेप्टिव इम्प्लांट, हॉरमोन डिपो इंजेक्शन, पेन किलर जेल, डीप फ्रीज़, डीप हीट जैसे तरीक़ा-ए-इलाज के रोज़े की हालत में इख़्तियार करने के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इस्तिफ़सार किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 21 मार्च 2022 में इस बारे में निम्नलिखित हिदायात फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: रोज़े की हालत में किसी भी तरीक़ा-ए-इलाज के इस्तेमाल के सिलसिले में कुछ उसूली बातें याद रखना बहुत ज़रूरी हैं। सब से पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला ने मरीज़ और मुसाफ़िर के विषय में हुक्म दिया है कि वह बीमारी या सफ़र की हालत में रोज़ा न रखें और मरज़ दूर होने और सफ़र ख़त्म होने पर ही उन रोज़ों की तकमील करें। और जो शख़्स किसी दाईमी मरज़ में मुब्तला हो और उसे कभी भी अपने तंदुरुस्त होने की उम्मीद न हो तो ऐसी सूरत में अगर वह ताक़त रखता है तो फ़िद्या दे दे। (सूरतुल बक़रह:185)

लेकिन अगर किसी शख़्स को कोई ऐसी तकलीफ़ हो जिस में डॉक्टरों के नज़दीक रोज़ा रखना उस इंसान की सेहत के लिए नुक़सानदेह नहीं तो वह शख़्स उस बीमारी में रोज़ा रख सकता है।

ऐसी बीमारी में अगर किसी क़िस्म की दवा के इस्तेमाल की ज़रूरत हो तो वह दवा सिर्फ़ रोज़ा रखने से पहले या रोज़ा खोलने के बाद ही इस्तेमाल की जा सकती है। रोज़े के दौरान ऐसी कोई भी दवा इस्तेमाल नहीं की जा सकती जो जिस्म के अंदर जाती हो। अलबत्ता अगर उस दवा का असर सिर्फ़ जिल्द पर हो और उस दवा का कोई हिस्सा जिस्म के अंदर दाख़िल न हो तो रोज़े की हालत में ऐसी दवा के इस्तेमाल में कोई हरज की बात नहीं। मिसालन किसी तेल, क्रीम, जेल या स्प्रे वग़ैरह की जिल्द पर मालिश या स्प्रे करना।

ऐसी दवा जिसे ऑपरेशन या इंजेक्शन के ज़रीए जिस्म के अंदर रखा या डाला जाता है और वह दवा जिस्म के अंदर आहिस्ता-आहिस्ता रिलीज़ होती रहती है तो ऐसी दवा भी आम दवाओं या खाने-पीने की अश्या की मानिंद रोज़ा रखने से पहले या रोज़ा खोलने के बाद ही जिस्म में इंजेक्ट की जा सकती है, रोज़े के दौरान उसे जिस्म में इंजेक्ट करना जाएज़ नहीं।

प्रश्न: : नारोवाल पाकिस्तान से एक मुअल्लिम साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में तहरीर किया कि प्लास्टिक वग़ैरह की टोपियाँ मसाजिद में रखना और उन्हें पहन कर नमाज़ पढ़ना बिदअत और नापसन्दीदा अमल है या नहीं? नज़दीक नमाज़-ए-फ़ज्र के फ़ौरन बाद जबकि दर्स-ए-क़ुरआन हो रहा हो फ़ज्र की सुन्नतें पढ़ना दुरुस्त है? हालाँकि अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि जब क़ुरआन करीम पढ़ा जा रहा हो तो उसे तवज्जोह और ख़ामोशी से सुनना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने पत्र तिथि 28 मार्च 2022 में इस प्रश्न: का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया:

उत्तर: मसाजिद में हस्ब-ए-तौफ़ीक़ मुनासिब और साफ़-सुथरा लिबास पहन कर जाना चाहिए। क्योंकि अल्लाह तआला ने मस्जिदों में ज़ीनत के सामान इख़्तियार करने का हुक्म दिया है। (सूरतुल आरफ़:32) इस हुक्म में दिलों की रूहानी सफ़ाई के साथ-साथ कपड़ों और बदन की ज़ाहिरी सफ़ाई भी शामिल है। इस लिए जहाँ तक मुमकिन हो मसाजिद में जाते वक़्त मुनासिब लिबास ज़ेब-ए-तन करना चाहिए और मुनासिब लिबास में सर को ढाँपना भी शामिल है। इस्लाम के हर दौर में बुज़ुर्गान-ए-उम्मत का इमामा, पगड़ी या टोपी के साथ सर ढाँपना उनकी आम आदत रही है। अहादीस में भी मुख़्तलिफ़ सहाबा से मरवी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इमामे का इस्तेमाल फ़रमाया करते थे। इसलिए हज़रत जाबिर बिन अब्दिल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़त्ह-ए-मक्का के दिन मक्का में दाख़िल हुए तो आप के सर-ए-मुबारक पर सिया इमामा था। इसी तरह हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ियल्लाहो अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोगों से ख़िताब फ़रमाया और आप के सर-ए-मुबारक पर सिया इमामा था।

(सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज बाब जवाज़ दुख़ूलि मक्कता बिग़ैरि इहराम)

पस मस्जिद में प्लास्टिक या कपड़े वग़ैरह की कुछ साफ़-सुथरी टोपियाँ इस लिए रखना कि अगर कोई नमाज़ी अपनी मर्ज़ी से उन्हें इस्तेमाल करना चाहे तो कर ले तो ऐसा करने में बिज़ाहिर कोई हरज की बात नहीं, बल्कि एक अच्छी बात की तरफ तरग़ीब की कोशिश है। बाज़ लोगों की ख़्वाहिश होती है कि वह नंगे सर नमाज़ न पढ़ें, उन्हें अगर मस्जिद में इस तरह टोपियों की सुहूलत मिल जाए तो वह ख़ुशी से उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना पसन्द करते हैं। लेकिन इस के साथ यह बात भी ज़रूरी है कि ज़बरदस्ती किसी को मजबूर नहीं किया जाना चाहिए कि वह ज़रूर यह टोपी पहन कर नमाज़ पढ़े।

इस लिए अगर कोई अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से मस्जिद में पड़ी यह टोपियाँ पहनना चाहे तो उसे रोकना नहीं चाहिए और अगर कोई न पहनना चाहे तो उसे मजबूर नहीं करना चाहिए।

बाक़ी जहाँ तक आप के दूसरे प्रश्न: का तअल्लुक़ है तो दर्स के दौरान सुन्नतें पढ़ने में कोई मुमानिअत नहीं है। अहादीस में आता है कि मसाजिद अल्लाह तआला के ज़िक्र, नमाज़ पढ़ने और क़ुरआन करीम की तिलावत करने के लिए हैं।

(सहीह मुस्लिम किताबुत्-तहारात बाब वुजूबि ग़स्लिल बौली व ग़ैरिहि मिनन्नजासात इज़ा हसलत फ़िल मस्जिद)

पस मसाजिद में यह सब काम एक वक़्त में भी हो सकते हैं इस तरह कि कोई शख़्स नवाफ़िल अदा कर रहा हो, कुछ लोग तिलावत कर रहे हों और कुछ लोग ज़िक्र-ए-इलाही कर रहें हों। लेकिन ऐसी सूरत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे

वसल्लम ने नसीहत फ़र्माई कि मस्जिद में मौजूद लोग एक दूसरे का ख़याल रखें और एक दूसरे से बढ़ कर ऊँची आवाज़ में तिलावत न करें।

(मोअता इमाम मालिक किताबुन्निदा लिस्सलात बाबुल अमल फ़िल क़िराअत)

इसके अतिररिक्त अहादीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह सुन्नत भी बयान हुई है कि नमाज़ का सलाम फेरने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अमूमन अपना चेहरा-ए-मुबारक सहाबा की तरफ कर लिया करते थे। इस मौक़े पर बाज़ अक़्वात आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सहाबा को कोई नसीहत भी फ़रमाते। नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लोगों से यह भी फ़रमाते कि अगर किसी ने गुज़िशता रात कोई ख़्वाब देखा हो तो वह उसे बयान करे।

(सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान बाब यस्तक़बिलुल इमामुन्नास इज़ा सल्लम, किताबुल जनाइज़ बाब मा क़ीला फ़ी औलादिल मुश्रिकीन। सुनन इब्ने माजा अल-मुक़द्दमा बाब इत्तिबाए सुन्नतिल ख़ुलफ़ाइर राशिदीन अल-महदिय्यीन)

फिर हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का यह इरशाद भी मौजूद है कि तुम में से जुमे के दिन जो कोई ऐसे वक़्त में मस्जिद आए जबकि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो उसे चाहिए कि पहले दो रकात इख़्तिसार के साथ अदा करे और फिर ख़ुत्बा सुनने के लिए बैठे।

(मुस्लिम किताबुल जुमुआ बाबुत्-तहिय्यति वल इमाम यख़्तुब)

इन सब अहादीस से पता चलता है कि किसी शख़्स के सुन्नतें पढ़ने के वक़्त अगर इमाम दर्स शुरू कर दे तो उसमें कोई हरज नहीं। क्योंकि अगर यह दुरुस्त न होता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जुमे के लिए देर से आने वाले शख़्स को यह हुक्म न देते कि तुम ख़ुत्बे के दौरान दो रकात नमाज़ पढ़ लो। इसी तरह दर्स के दौरान अगर कोई शख़्स सुन्नतें अदा करता है तो यह भी क़ाबिल-ए-इतिराज़ बात नहीं क्योंकि नमाज़ के फ़ौरन बाद सुन्नतें पढ़ना ज़रूरी है, दर्स सुनना ज़रूरी नहीं। ख़ुसूसन नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद जबकि वक़्त कम हो और सूरज निकलने का इंदेशा हो तो फ़ौरी तौर पर सुन्नतें अदा करनी चाहिए।

बाक़ी जहाँ तक इस मामले का इन्तिज़ामी पहलू है तो मेरे नज़दीक अगर दर्स ऐसी नमाज़ के साथ हो जिस के बाद भी सुन्नतों की अदायगी मस्नून हो जैसे नमाज़-ए-ज़ुहर, मग़रिब या इशा तो फिर सुन्नतों की अदायगी के बाद दर्स देना चाहिए लेकिन अगर नमाज़ के बाद सुन्नतें न हों तो फिर नमाज़ के मुआ बाद दर्स शुरू किया जा सकता है। इस सूरत में अगर कोई शख़्स नमाज़-ए-फ़ज्र की पहले की दो सुन्नतें फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अदा करता है तो वह दर्स के दौरान भी उन सुन्नतों की अदायगी कर सकता है।

प्रश्न: रबवा से एक महिला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि अहमदिया समुदाय धार्मिक रूप से कितने कलिमों पर विश्वास रखता है, जो किसी हदीस या कुरआन से प्रमाणित हैं? हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 21 मार्च 2022 के अपने पत्र में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया:

उत्तर: कलिमा तो एक ही है जिसे कलिमा-ए-तय्यिबा या कलिमा-ए-शहादत कहते हैं। कलिमा-ए-तय्यिबा में अल्लाह की एकता और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैगंबर होने की सरल शब्दों में पुष्टि की जाती है, और कलिमा-ए-शहादत में इन दोनों बातों (अल्लाह की एकता और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैगंबर होने) की गवाही के साथ पुष्टि की जाती है।

इस्लाम का पहला मूल सिद्धांत भी यही कलिमा है, अर्थात अल्लाह की एकता और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैगंबर होने की पुष्टि। इस संबंध में हदीस में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "इस्लाम की नींव पाँच चीज़ों पर रखी गई है: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं; नमाज़ स्थापित करना; ज़कात अदा करना; बैतुल्लाह का हज करना; और रमज़ान के रोज़े रखना।" (सहीह बुखारी, किताबुल ईमान)

यही वह कलिमा है जिसका इकरार (पुष्टि) लेने का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्लाम में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति से आदेश देते थे। जब उन्होंने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा, तो उन्हें भी यही नसीहत फरमाई: "तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो पवित्र ग्रंथ के अनुयायी हैं। जब तुम उनके पास पहुँचो तो उन्हें इस बात की दावत दो कि वे गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।"

(सहीह बुखारी, किताबुज़्ज़कात)

अपने आदर्श और स्वामी, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चरण-चिह्नों पर चलते हुए, उनके सच्चे सेवक, हज़रत मसीह मौऊद और महदी मौऊद अलैहिस्सलाम भी बै'त (प्रतिबद्धता की शपथ) लेते समय सबसे पहले यही कलिमा-ए-शहादत पढ़वाया करते थे। हज़रत मौलाना गुलाम रसूल साहिब राजिकी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बै'त का वर्णन करते हुए लिखते हैं: "हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम ने बै'त लेते समय मुझसे कलिमा-ए-शहादत पढ़वाया।"

(हयात-ए-कुदसी, पृष्ठ 494)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इसी परंपरा का पालन करते हुए, अहमदियत के खलीफा भी बै'त लेते समय सबसे पहले इसी कलिमा-ए-शहादत का इकरार करवाते हैं। इस प्रकार, अल्लाह के अनुग्रह से, अहमदिया समुदाय के प्रत्येक सदस्य का इस कलिमे पर पूर्ण विश्वास है और हम इसे इस्लाम के मूल सिद्धांतों में से पहला सिद्धांत मानते हैं।

जहाँ तक मुसलमानों में प्रचलित विभिन्न नामों वाले छह कलिमों की बात है, तो वे छह कलिमे, उनके नाम और उनकी यह व्यवस्था क़ुरआन-ए-करीम या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों से कहीं प्रमाणित नहीं हैं। बल्कि, हदीसों में वर्णित विभिन्न प्रार्थनाओं और जापों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और खिलाफ़त-ए-राशिदा के पवित्र काल के बहुत समय बाद के दौर में जोड़कर ये कलिमे बनाए गए और उन्हें ये नाम दिए गए। इसलिए, इन कलिमों की इस व्यवस्था और उस महत्व व अनिवार्यता (जो आम मुसलमानों में प्रचलित है) की कोई धार्मिक मान्यता नहीं है।

प्रश्न: यूके से एक महिला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि क़ुरआन-ए-करीम में स्वर्गवासियों को नज़रें झुकाए रहने वाली और सद्गुणी कुंवारी स्त्रियाँ मिलने का वादा दिया गया है। हमारी भाषा में 'दोशीज़ा' का अर्थ स्त्री होता है। यदि ये स्त्रियाँ हैं, तो यह इनाम तो केवल पुरुषों को ही मिला, ईमान वाली महिलाओं के लिए स्वर्ग में क्या है? साथ ही, क्या स्त्री की रचना केवल पुरुष के लिए ही हुई है? हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 9 अप्रैल 2022 के अपने पत्र में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

उत्तर: जन्नत की सुविधाओं के बारे में क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों में जो बातें बताई गई हैं, वे सभी प्रतीकात्मक भाषा पर आधारित हैं और केवल हमें समझाने के लिए इन चीज़ों की दुनियावी वस्तुओं के साथ समानता बताई गई है। इस संबंध में अल्लाह तआला फ़रमाता है: "उस स्वर्ग की उदाहरण है, जिसका डर रखने वालों से वादा किया गया है।"

(सूरः अर-राद: 36)

फिर अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है: "कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उनके लिए, उनके कर्मों के बदले में, आँखों को ठंडक पहुँचाने वाली कौन-कौन सी चीज़ें छिपा कर रखी गई हैं।"

(सूरः अस्-सज्दा: 18)

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'मैंने अपने नेक बंदों के लिए वह कुछ तैयार कर रखा है जिसे न किसी आँख ने देखा है, न किसी कान ने सुना है और न ही किसी मनुष्य के दिल पर उसका ख्याल गुज़रा है। वे सुविधाएँ ऐसा भंडार हैं कि उनके मुकाबले में जो सुविधाएँ तुम्हें मालूम हैं, उनका क्या ज़िक्र।'" (सहीह बुखारी, किताबुत्-तफ़सीर)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं: "अल्लाह ने स्वर्ग की अच्छाइयों को उस रूप में बयान किया है जो अरब के लोगों को पसंद थीं, वही बयान कर दीं ताकि इस तरह उनके दिल उस तरफ आकर्षित हो जाएँ। और वास्तव में वे चीज़ें और हैं, यही चीज़ें नहीं। मगर ज़रूरी था कि ऐसा बयान किया जाता ताकि दिलों को आकर्षित किया जा सके।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, पाँचवाँ भाग, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 21, पृष्ठ 424)

शेष ...

★ ★ ★

# हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बरकतों की हामिल ऐतिहासिक स्पेन 2013 की यात्रा

## (भाग -3)

मस्जिद बशारत, पेदरोआबाद के निर्माण के लगभग 32 वर्ष बाद, वालेंसिया (Valencia) स्थान पर एकेश्वर ख़ुदा की उपासना के लिए निर्मित की जाने वाली अहमदिया मुस्लिम जमाअत की दूसरी मस्जिद 'मस्जिद बैत-उर-रहमान' के उद्घाटन और स्पेन के लोगों को इस्लाम के सुंदर और शांतिपूर्ण सिद्धांतों का संदेश देने के लिए, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का तीसरा धन्य और धर्मयात्रा का दौरा। वालेंसिया में शुभ आगमन। व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें। जुमे के ख़ुत्बा और जुमे की नमाज़ के साथ उद्घाटन।

(वालेंसिया (स्पेन) में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट)

जुमे का ख़ुत्बा

तशह्हुद, तऊव्वुज़ और सूरः फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः अल्-बक़रह की आयत 168 और 169 की तिलावत की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्हम्दुलिल्लाह! आज हमें स्पेन में दूसरी अहमदिया मस्जिद बनाने का सौभाग्य मिल रहा है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत को यह दूसरी मस्जिद बनाने का सौभाग्य मिल रहा है। लगभग सात साल पहले मैंने मस्जिद बशारत, पेदरोआबाद में अधिक मस्जिदें बनाने के महत्व पर जोर दिया था और उस समय यह निर्णय हुआ था कि वालेंसिया (Valencia) में मस्जिद का निर्माण किया जाए। अहमदी तो शायद इस इलाके में 130 के करीब हैं और दूसरी कुछ जगहों पर इससे अधिक होंगे। बहरहाल मस्जिद बशारत के बाद जो यह मस्जिद बनाने के लिए सोची गई, उसका महत्व यहां के ऐतिहासिक दृष्टिकोण से था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सात सौ साल बाद पहली मस्जिद बनाने का सौभाग्य अहमदिया जमाअत ही को अल्लाह तआला ने प्रदान किया था। इसलिए स्पेन में यद्यपि इस्लाम दोबारा दिखाई देता है लेकिन इसकी शुरुआत अहमदिया जमाअत के माध्यम से हुई है। लेकिन वास्तविक इस्लाम उस समय दिखाई देगा जब मसीह मुहम्मदी अलैहिस्सलाम के सेवक अपने महत्व को समझते हुए इसकी ओर ध्यान देंगे और इस्लाम के सुंदर संदेश को यहां के हर व्यक्ति तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: शायद मेरी बात सुनकर कुछ लोग आप में से कहेंगे, कुछ निराशावादी सोच रखने वाले हैं, कि यहां अहमदी बहुत कम संख्या में हैं, किस तरह हम हर एक को और हर जगह यह संदेश पहुंचा सकते हैं। लेकिन यदि एक दृढ़ संकल्प और साहस से कोशिश हो तो जिस संख्या में हैं वही एक अच्छे हिस्से तक अहमदियत का संदेश और वास्तविक इस्लाम पहुंचा सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसलिए अब भी समय है, स्पेन में रहने वाले अहमदी और पदाधिकारी, हर स्तर के पदाधिकारी, हर संगठन के पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारियों को समझें और स्वयं अपने लक्ष्य निर्धारित करके फिर उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। जो सुंदर और वास्तविक इस्लाम हम प्रस्तुत करते हैं वह तो आज दुनिया का ध्यान आकर्षित करने का कारण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: वालेंसिया की ऐतिहासिक महत्व के कारण मैंने यहां मस्जिद बनाने को प्राथमिकता दी थी। इसलिए कि जब स्पेन में जालिम बादशाह और रानी ने जबरदस्ती मुसलमानों को ईसाई बनाना शुरू किया था, वालेंसिया उस जमाने में भी वह इलाका था जहां मुसलमानों के साथ दुर्व्यवहार के बावजूद अरबी बोली जाती थी, इस्लामी रीति-रिवाज कायम रखे हुए थे। वास्तव में मुसलमान अपनी इबादतें ही अदा करते थे और जो भी इस्लामी शिक्षा है उसे कायम रखे हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब सत्रहवीं सदी के शुरू में तत्कालीन बादशाह ने मुसलमानों को या उन लोगों को जिनके परिवार पहले मुसलमान थे, स्पेन से निकालने का अभियान फिर से शुरू किया तो सबसे पहले योजना की शुरुआत वालेंसिया से की। क्योंकि यहां मुसलमान अपने धर्म पर कायम रहते हुए जितनी हद तक अमल कर सकते थे, करने की कोशिश करते थे। हालांकि उस समय यहां मुसलमानों की हालत आर्थिक दृष्टि से काफी कमजोर थी और उन्हें धीरे-धीरे बड़े शहरों से निकालकर आसपास के इलाकों में बसा दिया गया था। मामूली संपत्ति उनके पास थी, गरीबी थी, लेकिन फिर भी उनका इस्लाम से संबंध था।

बहरहाल विभिन्न प्रकार की सेनाएं यहां आती रहीं, इटली की सेनाएं भी आईं, उन्होंने मुसलमानों को अत्याचारों का शिकार बनाया और फैसले के अनुसार इन अत्याचारों के बाद वयस्कों को देश निकाला दे दिया गया और उनके बच्चों को ईसाइयों के हवाले कर दिया गया जिन्होंने उन बच्चों को अपने घरों में पाला-पोसा लेकिन अपने बच्चों की तरह नहीं बल्कि नौकरों और गुलामों की तरह। इसलिए वे बच्चे जो इस्लाम से छीने गए थे, वे बच्चे जो मुसलमानों के घरों में पैदा हुए और मुसलमान थे, उन्हें उनकी और उनके मां-बाप की मर्जी के बिना एकेश्वर ख़ुदा की उपासना से रोका गया और उसकी बजाए त्रित्व को मानने पर मजबूर किया गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आज हमारा काम है कि उन बच्चों की पीढ़ियों को दोबारा एकेश्वर ख़ुदा की उपासना करने वाला बनाएं और सिर्फ उन्हीं को नहीं बल्कि यहां रहने वाले हर व्यक्ति को जिससे हमें मानवता के प्रेम के कारण प्रेम है। हर नागरिक जो यहां रहता है, उससे हमें प्रेम है इसलिए कि हम मानवता से प्रेम करने वाले हैं और मानवता के प्रेम के कारण हम उनके लिए वही पसंद करते हैं जो अपने लिए पसंद करते हैं। इन लोगों को इस वजह से एकेश्वर ख़ुदा की उपासना करने वाला बनाकर उनकी दुनिया और आखिरत (परलोक) को सुधारने वाले बनाएं और इस क्षेत्र में विशेष रूप से इसकी कोशिश करें।

जैसा कि मैंने कहा यहां प्रांत में सबसे अधिक लंबे समय तक इस्लाम को सुरक्षित और कायम रखने की कोशिश की गई। यहां से मुसलमानों के निष्कासन की सात सदियां नहीं मनाई जातीं बल्कि यही माना जाता है कि सबसे अंत में चार सदियां पहले यहां से मुसलमानों को निकाला गया था। या मुसलमानों की नस्ल को खत्म करने की कोशिश की गई थी। निश्चित रूप से इसमें कोई शक नहीं कि यहां सदियों मुसलमानों का शासन कायम रहने के बाद उसका पतन मुसलमानों की अपनी लालचों और साजिशों की वजह से हुआ। जो भी नाम की खिलाफ़त थी, उससे भी वफा नहीं की गई। न खलीफा या बादशाह ने अपनी जिम्मेदारी का हक अदा किया, न ही उसके विशिष्ट और अमीर जो थे उन्होंने हक अदा किया और फिर हर एक ने अपनी-अपनी डेढ़-डेढ़ ईंट की मस्जिद बना ली थी। और इस डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाकर विभिन्न बादशाहतें कायम करने की कोशिश की गई और जो नतीजा फिर वही निकला जो ऐसे स्वार्थी कामों का निकलता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अब मसीह मुहम्मदी अलैहिस्सलाम जो अंतिम खलीफा हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची खिलाफ़त के बाद वास्तविक उत्तराधिकारी हैं, जिनके बाद फिर खिलाफ़त का सिलसिला जारी है, उनके मानने वालों का काम है कि इस खोई हुई प्रतिष्ठा को दोबारा इस इलाके में, इस देश में कायम करें। बल्कि दुनिया को 'ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) की वास्तविकता से परिचित कराया जाए, उसकी वास्तविकता दुनिया को बताई जाए।

इसलिए इस पुरस्कार से जो अल्लाह तआला ने आप पर किया है, इससे लाभ उठाएं। इस मस्जिद को अल्लाह तआला के लिए शुद्ध करते हुए उसकी उपासना से सजाएं ताकि अल्लाह तआला के अनुग्रहों के वारिस बनें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 13 November 2025 Issue No. 46

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

तआला ने हमें इस इलाके में अपनी मस्जिद बनाने का सौभाग्य प्रदान किया है। जगह भी अल्लाह तआला के अनुग्रह से बहुत उपयुक्त मिली है। यह मस्जिद हाईवे से भी दिखाई देती है। बिल्कुल हाईवे के ऊपर है लेकिन शहर की नई आबादी में भी है। अच्छे सज्जनों का इलाका है। पड़ोसी भी अच्छे और सभ्य हैं। अल्लाह तआला ने पड़ोस भी अच्छा प्रदान किया है यह भी उसका बड़ा अहसान है। इसलिए इस अवसर से हमें लाभ उठाना चाहिए। मस्जिद बनाकर सिर्फ इस बात पर खुश न हो जाएं कि स्पेन के एक और शहर में हमारी सुंदर मस्जिद बन गई। इसलिए अपनी हालत पर भी नजर रखनी होगी, अपनी इबादतों पर भी नजर रखनी होगी। अपनी जिम्मेदारियों पर भी नजर रखनी होगी।

मस्जिद के बारे में कुछ विवरण प्रस्तुत करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मस्जिद का छत वाला हिस्सा 1350 वर्ग फुट है और मस्जिद के निर्माण पर लगभग एक दशमलव दो मिलियन यूरो खर्च हुआ है। यहां नमाज़ों के लिए पुरुषों और महिलाओं के जो हॉल हैं काफी बड़े हैं। इसके अलावा इस मस्जिद के साथ दो बहुउद्देश्यीय (multi-purpose) हॉल भी हैं और काफी बड़े हॉल हैं। अन्य सुविधाएं भी हैं, सात कार्यालय हैं, एक पुस्तकालय है, एक किताबों की दुकान है, रसोई बड़ी अच्छी है, एक बड़ा भंडार है, तकनीकी कक्ष है। फिर उसी तरह इस पूरी इमारत को वातानुकूलित किया गया है। महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग वज़ू आदि की सुविधाएं भी हैं। फिर जब जगह खरीदी गई थी तो उस समय यहां एक बंगला भी बना हुआ था। अब उसमें मज़ीद तीन कमरों का इज़ाफा किया गया है।

अल्लाह करे कि यह मस्जिद इलाके और प्रांत के लोगों को इस्लाम की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करने वाली साबित हो और हममें से हर अहमदी जो यहां इस इलाके में रहने वाला है, प्रयास करके इसका हक अदा करने वाला बने।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस मस्जिद के निर्माण में अधिकांश सहायता तो केंद्र की ओर से आई थी। जो तकनीकी सहायता है वह भी केंद्र की ओर से ही हुई और चौधरी इजाज साहिब हमारे वरिष्ठ इंजीनियर हैं, उन्होंने बड़ी मेहनत से इसमें बहुत सारे काम करवाए हैं, बड़ी विस्तार से हर चीज का जायजा लिया। जहां-जहां अतिरिक्त खर्च होते थे। वहां कमियां कीं, लेकिन उस कमी की वजह से मानक पर समझौता (compromise) नहीं किया, किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी। वह बीमार भी हैं, हफ्ते में एक-दो बार शायद डायलिसिस (Dialysis) भी होता है, गुर्दे की बीमारी है लेकिन बड़े साहस से अल्लाह तआला के अनुग्रह से उन्होंने काम किया है। अल्लाह तआला उन्हें भी पुरस्कार दे। और उन्हें स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती प्रदान करे ताकि आगे भी वे जमाअत के काम करते रहें।

(हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमे के खुत्बा का पूरा पाठ परंपरा के अनुसार अलग से प्रकाशित होगा।)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह जुमे का खुत्बा तीन बजे तक जारी रहा और MTA इंटरनेशनल के माध्यम से दुनिया भर में Live प्रसारित हुआ। यह पहला ऐसा कार्यक्रम और जुमे का खुत्बा था जो वालेंसिया की धरती से Live प्रसारित हुआ।

वालेंसिया जहां से मुसलमान हमेशा के लिए निकाल दिए गए थे और इस्लाम का नाम और संदेश मिटा दिया गया था। आज अल्लाह तआला की विशेष दैवीय योजना के तहत उसी जगह से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमे के खुत्बा के माध्यम से इस्लाम की सुंदर शिक्षा और शांति व सुरक्षा का संदेश पूरी दुनिया में पहुंचा। यह कदापि संयोग नहीं है। अल्लाह तआला की योजनाएं बहुत गहरी हैं। उसके इरादों और रहस्यों को कोई नहीं जानता। हां हम यह बात निश्चय के साथ कह सकते हैं कि अब इस इलाके में इस्लाम का चमकता सूर्य दोबारा उदय हो चुका है जो इन शा अल्लाह इस पूरे इलाके को अपने प्रकाश से रोशन कर देगा।

जुमे के खुत्बा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुमा और असर एक साथ पढ़कर पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने ठहरने के स्थान पर पहुंच गए।

आज के इस जुमे के खुत्बा और उद्घाटन कार्यक्रम में स्पेन की सभी जमाअतों से सदस्य बड़ी संख्या में शामिल हुए। इसके अलावा इस मस्जिद के उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए जर्मनी, यूके, फ्रांस, नॉर्वे, बेल्जियम, हॉलैंड, पुर्तगाल और अमरीका से आने वाले प्रतिनिधि मंडल और सदस्य भी शामिल हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वालेंसिया में एक दूसरी मस्जिद का उल्लेख करते हुए कहा था: 'वालेंसिया में हमारी मस्जिद के अलावा एक और मस्जिद स्थापित है जिसका खर्च मिस्र और सऊदी अरब ने वहन किया था।'

अल्लाह के अनुग्रह से यहां के अखबार 'मस्जिद बैत-उर-रहमान' को इलाके की बड़ी मस्जिद घोषित कर रहे हैं। मस्जिद के पुरुषों और महिलाओं के हॉल में 450 व्यक्ति नमाज़ अदा कर सकते हैं। इसके अलावा मस्जिद के दोनों बहुउद्देश्यीय हॉलों में 285 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस तरह यह कुल संख्या 735 बन जाती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जुमे के खुत्बा में कुछ तकनीकी कारणों से ढाई सौ की संख्या का उल्लेख किया था।

आज जुमे के समय भी प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि आए हुए थे।

(शेष आगामी)

## 130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इसे हर प्रकार से सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए जमाअत के सभी मित्र दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
**1800 3010 2131**
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

**Web.www.alislam.org**
**www.ahmadiyyamuslimjamaat.in**

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad